CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Q23:226
BRA
1979B.S.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

॥ श्रीः ॥

सचित्र

॥ रामेश्वर क्षेत्रकामाहात्म्य ॥

नं. ५०४१

॥ श्रीरामनाथ लिङ्ग-प्रतिष्ठा ॥

श्रीमनानन्द ब्रह्मचारी ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नं० १। पुराण
१७०
५०४१
४५५

॥ श्रीः ॥

स्कन्दपुराणान्तर्गत सेतुखण्डमाहात्म्यका भावार्थ सह

सचित्र

श्री रामेश्वरक्षेत्रकामाहात्म्य

श्रीमनानन्द ब्रह्मचारी

सम्पादित।

ॐ शङ्खनिधि एण्ड कम्पेनी

कर्तृक

रेजिष्टर्ड

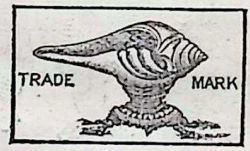

दक्षिणावर्त्त शंख

कुम्भघोण

पुराण

"शारदाविलास यन्त्रालयमे"

मुद्रित कर।

रामेश्वरसे प्रकाशित।

सं १९७९। इ० १९२३।

प्रकाशकने सर्वाधिकार स्वाधीन रखा है।

कापिरैट् रेजिस्टर्ड्] [Copyright Registered.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

॥ भूमिका ॥

कलियुगमे बिधिपुर्बक धर्माचरण करनेसे थोडाहि मे अन्यान्य युग अपेक्षा अधिक फल मिलता है। तीर्थका माहात्म्य अवगतहो स्नान, दर्शनादि करनेसे पापका मोचन होता। यह हिन्दुस्थानमे जो चारों धाम है उसमे सेतुबन्ध-रामेश्वर एक धाम। यहंपर बहुत् धार्मिक महोदयने यात्राके लिये आतें है; परन्तु ठिक नियमसे तीर्थका कार्य्य नहि होता, कारण यहंपर पुराण-वर्णित जो २४ प्रधान तीर्थमे स्नान करना अवश्य कर्त्तव्य है, उसमे कइ तीर्थ दूर स्थानमे रहनेसे और वह स्थानका परिचय अज्ञातके कारण पूरीका मध्यमे अवस्थित अन्यान्य तीर्थपर स्नान करके २४ तीर्थका स्नान पूरा कर लेतें है। इसिसे यात्री महाशयगणका सुभिताके लिये समस्त तीर्थका स्थान परिचय और माहात्म्य प्रकाश करनेका बिचार कर हमने बङ्गाला भाषामे एक पुस्तक लिखा है। उस पुस्तकका मुद्रण भार प्रसिद्ध शङ्ख-व्यवसायी ढाका-निवासी बाबु हेमचन्द्र कर महाशयने कृपाकर ग्रहण किया है। रामेश्वरजीमे हेमचन्द्र बाबुका शङ्खकी एजेण्ट "ॐ शङ्खनिधि एण्ड कम्पेनी" का सत्वाधिकारी श्रीवीरभद्र नायकरजी हेमचन्द्र बाबुसे उस पुस्तकका मर्म्म अवगतहो हिन्दि भाषामे ऐसा पुस्तकका प्रचलन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आवश्यक बिचारकर हमको बिशेष अनुरोध करनेसे यह पुस्तक हिन्दि भाषामे लिखकर प्रकाश और प्रचार करनेको लिये "ॐ शङ्कनिधि एण्ड कम्पेनी" को ग्रन्थाधिकार सह दिया है। समस्त तीर्थका परिचय और सेतुखण्ड-माहात्म्यका मूलका भावार्थ संक्षेपमे सठिक हृदयङ्गम होनेको लिये बहुत् यत्न और परिश्रम किया। अब पाठक यात्रीलोगोंका उपयोगी होनेसे मेरा श्रम सार्थक होगा, निबेदनमिति।

मथुरादास मावजी मेघजी
भाटीया-धर्मशाला
रामेश्वरम्।

निबेदक,
श्रीमनानन्द ब्रह्मचारी।

॥ प्रकाशकका निबेदन ॥

मेइ कृतज्ञताके साथ निबेदन करता हुं कि, हिन्दिभाषाभिज्ञ यात्रीलोगोंका इस प्रकार पुस्तकमे बिशेष उपकार होगा समझकर, श्रीयुत् मनानन्द ब्रह्मचारीजीको बिशेष अनुरोध करनेसे, स्वामीजी कृपाकर बहुत् श्रम स्वकार करके, यह पुस्तक हिन्दि भाषामे सम्पादन कर मेरेको, प्रकाश और प्रचारके लिये ग्रन्थाधिकार सह प्रदान किये है। अब पाठक यात्रीलोगोंका कथञ्चित् भि उपकार होनेसे स्वामीजीका श्रम, और मेरा आग्रह, सार्थक होगा निबेदनमिति।

रामेश्वरम्।
१८-१२-१९२२

निबेदक,
ॐ शङ्कनिधि एण्ड कंपेनी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

4089

श्रीयुत मनानन्द ब्रह्मचारी ।

स्वामिजी ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

॥ श्रीः ॥

॥ सूचीपत्र ॥

विषय ।			पत्राङ्क ।
१. सूचना	...	...	१
२. चक्र तीर्थ	...	...	५
३. बेतालवरद तीर्थ	...	...	१०
४. पापविनाशन तीर्थ	...	...	१३
५. सीतासर तीर्थ	...	...	१६
६. मङ्गल तीर्थ	...	...	१७
७. अमृतवापिका तीर्थ		...	१९
८. ब्रह्मकुण्ड तीर्थ	...	...	२१
९. हनुमानकुण्ड तीर्थ	...	...	२३
१०. अगस्त्य तीर्थ	...	...	२४
११. राम तीर्थ	...	...	२५
१२. लक्ष्मण तीर्थ	...	...	२७
१३. जटा तीर्थ	...	...	२९
१४. लक्ष्मी तीर्थ	...	...	३०
१५. अग्नि तीर्थ	...	...	३१
१६. शक्र तीर्थ	...	...	३४
१७. शिव तीर्थ	...	...	३५

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विषय ।	पत्राङ्क ।
१८. शङ्ख तीर्थ	३७
१९. यमुना गङ्गा और गया तीर्थ ...	३९
२०. कोटि तीर्थ	४१
२१. साध्यामृत तीर्थ	४२
२२. सर्व तीर्थ (मानसतीर्थ) ...	४४
२३. धनुष्कोटि तीर्थ	४६
२४. क्षीर सरोवर तीर्थ	५१
२५. कपि तीर्थ	५५
२६. गायत्री और सरस्वती तीर्थ (तथा सावित्री तीर्थ)	५८
२७. ऋणमोचन और आन्यान्य तीर्थ	६१
२८. सेतुमाधव तीर्थ	६३
२९. रामनाथजीकि प्रतिष्ठा ...	६७
१. अन्यान्य दर्शनीय स्थान का बिवरण	८३
२. रामेश्वर देवस्थानकी नोटिशका नकल	८५
३. रामेश्वरजीमे गौंएका सेवाका अभाव	८९
४. शङ्ख माहात्म्य	९१
५. जनार्दन क्षेत्रका माहात्म्य	९३

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चक्रतीर्थ—देवी-पत्तन ।

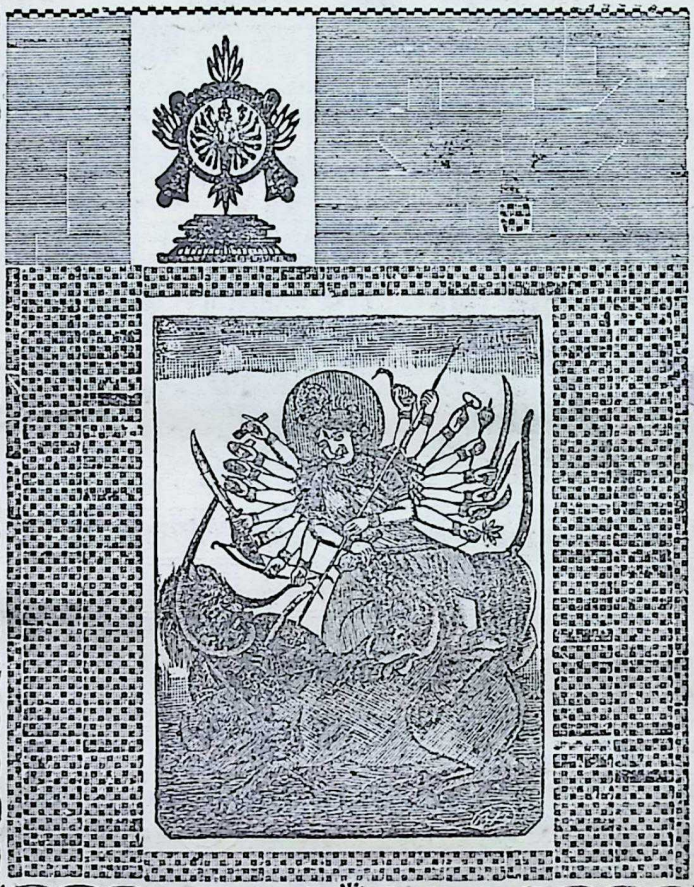

"देवी भगवतीने संग्रामकर महिषासुरको व्याकुल करनेसे महिषासुरने भयभीत हो यह चक्र-तीर्थमे प्रवेश कर छिप गये थे, परन्तु देवीने वहिं जाकर उनको बधकी थि। इसिसे इस स्थानका नाम देवीपत्तन अथवा देवीपुर"। (९। १० पृष्ठा)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

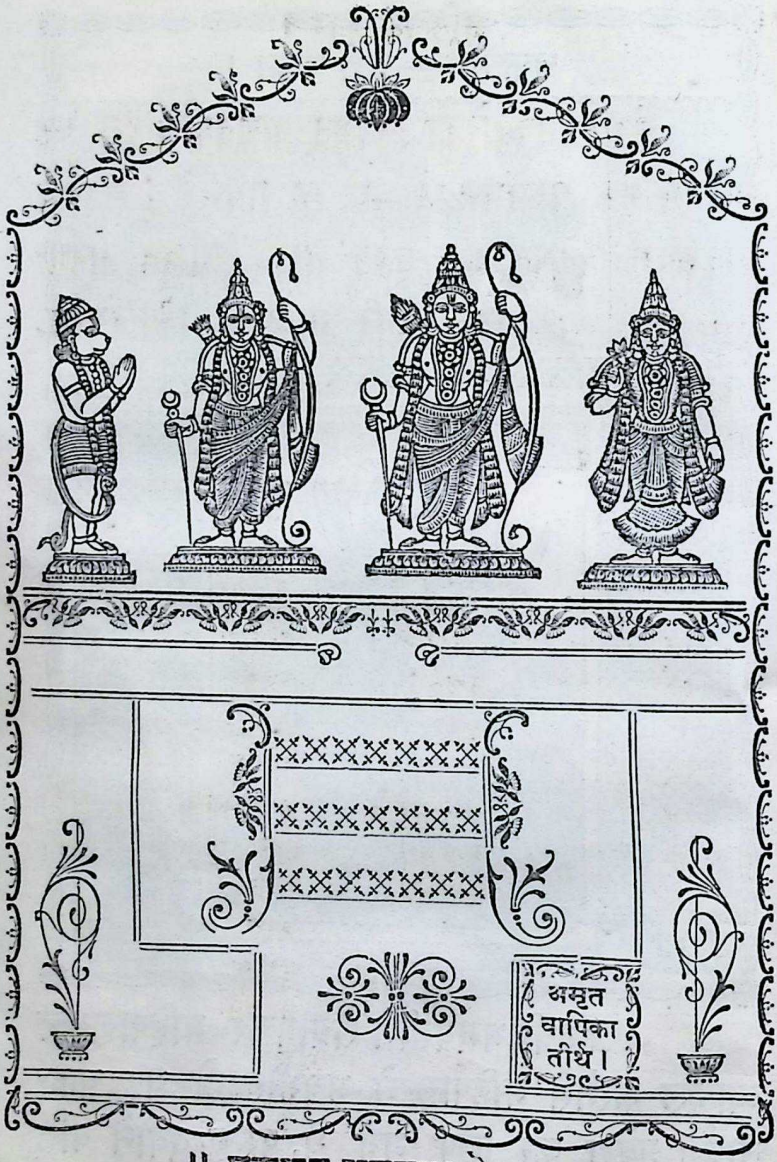

॥ एकान्त-रामनाथ क्षेत्र ॥

" तदनन्तर एकान्त-रामनाथ क्षेत्रके भितर अमृतवापिका तीर्थमे स्नान करना चाहिये " । (१९ पृष्ठा)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

त्रुटि स्वीकार ।

संशोधनकारिका किञ्चित् असतर्कता हेतु कइ स्थानमे प्रुफ संशोधनका त्रुटि रह गया है । सहृदय पाठकवर्ग किञ्चित् कृपा पुर्वक नीम्न लिखित संशोधनानुसार पाठ करके त्रुटि मार्ज्जना किजियेगा, निवेदनमिति । अनुगत-प्रकाशक ।

पृष्ठा.	पङ्क्ति.	अशुद्ध.	शुद्ध.
२	११	आज्ञाप्ते	आज्ञासे
७	१	प्राथना	प्रार्थना
”	१७	मुदर्शनके	सुदर्शनके
१३	१५	कोम्पानो	कम्पेनी
१५	९	पुत्तका	पुत्रका
”	१७	हुपे	हुये
१६	१०	श्रभाव	अभाव
२४	८	अगत्त्यजीने	अगस्त्यजीने
२६	१	श्रस्त्र	अस्त्र
”	२	कारानेके	करानेके
३१	१८	करतें	करते
४०	१५	मुनिके	मुनिने
४८	१५	भृगचर्म	मृगचर्म
”	”	भृग	मृग
६०	६	करणेसे	करनेसे
७१	१६	(नहि है) नीम्नलिखित पङ्क्ति होगा—	

“साधुलोगोंके लिये, काकचोक वैष्णव, सन्यासी दशनामी और उदासी यह तिन मठ प्रधान है” ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

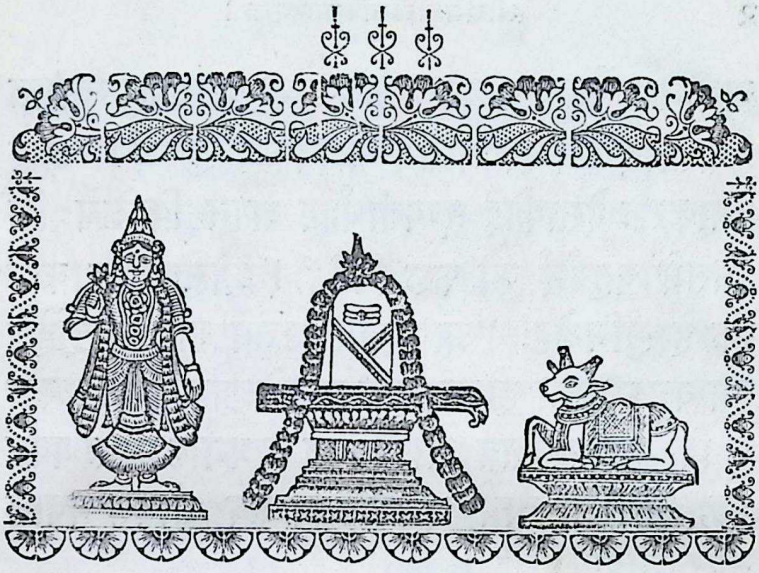

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

देवेन्द्र-मौलि-मन्दार-मकरन्द-कणारुणाः ।
विघ्नं हरन्तु हेरम्ब चरणाम्बुज रेणवः ॥

स्कन्दपुराणांतर्गत सेतुखण्ड माहात्म्यका भावार्थसह

॥ श्रीरामेश्वरक्षेत्रकामाहात्म्य ॥

सूचना ॥

पुण्यक्षेत्र श्रीनैमिषारण्य मे शौनकादि समस्त मुनि आपन आपन शिष्य प्रशिष्यों सह परस्पर शास्त्रालोचना करते थे इस समय श्रीव्यासजीका प्रिय शिष्य परम पण्डित समस्त पुराणाभिज्ञ श्रीसुतजी वहांपर आनेसे समस्त मुनिओंने उठकर वडे प्रेमसे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आसनपर बैठाय पाद्यअर्घ्यादि द्वारा पूजनकर स्वागत कुशलादि प्रश्न का अन्तमे कहा कि हे सुतजी! "आप कृपाकरके ऐसाकोइ पूण्यतीर्थका वर्णन किजिये कि जिसमे चतुर्वर्ग का फल मिले" । श्रीसुतजीने कहा कि हे मुनिश्रेष्ठ! "आप अति उत्तम वात पुछा है । हम वहुत प्रसन्न होकर ऐसा पुण्यक्षेत्रका वर्णन करता हुं कि जंहापर शिव और विष्णु मे प्रगाढ भक्ति प्रकट हुइ, और जो तीर्थ भूमण्डलका सव तीर्थसे प्रधान मोक्ष देनेवाला है" ।

श्रीसुतजी कहते है कि " हे मुनिगणों! त्रेता-युगमे श्रीरामचन्द्रजी पितृ आज्ञासे वनवास करनेको लिये दण्डकारण्य मे पञ्चवटी वनपर सीताजी और लक्ष्मण जी के साथ निवास करनेका समय लङ्काधि-पति रावण छल से श्रीसीताजी को हरण कर ले गया था। श्रीरामचन्द्रजी शोकाकूल होकर लक्ष्मणजीके साथ सीताको ढुंढते ढुंढते पम्पासरका तीरपर जाय हनुमान से मिले, तथा किष्किन्धाधिपति वालिको वध करके किष्किन्धा राज्य सुग्रीव को देकर उनसे मित्रता किया । अनन्तर बहुतसी वानरों को सीताकी अनु-सन्धानके लिये सुग्रीवने भेजा, उनमे हनुमान लङ्का जाकर सीताका सन्धान लाने से, श्रीरामचन्द्रजी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लक्ष्मण, सुग्रीव, हनुमान और वहुत सा वानरसैन्य लेकर लङ्काके और चलते चलते दक्षिण समुद्रके तीर मे महेन्द्र पर्वत पर पौंछकर चक्रतीर्थ मे अवस्थान किया । यहं पर विभीषणजी आपने भाइ रावण का अत्याचार देख पीडित होकर श्रीरामचन्द्रजी के पास आयके सीताकी उद्धार के लिये प्रतिज्ञा कर संगमे रहने लगा ।

अनन्तर श्रीरामचन्द्रजी दुस्तर समुद्र लंघनका उपाय चिन्ता करते हुये तिन दिन तिन रात्रि उपवास कर कुंशे के आसन मे वैठे समुद्रजी का आराधना करने लगे । परन्तु समुद्र ने देखा दिया नहि । तव क्रोधकर श्रीरामचन्द्रजी धनुष पर वाण लगायके समुद्रको सुखा देनेको लिये वाण निक्षेप करनेसे समुद्र महाभीत हो श्रीरामचन्द्रजी का पास आय कृताञ्जलि से स्तुति करके कहा कि "आपक्रोध सम्बरण किजिये मेइ सेतुके लिये आपका सहायता करुंगा । आपकी साथ विश्वकर्माजी के पुत्र नलनामक जो सेना है उनका हाथ से वृक्ष, तृण, प्रस्तरादि द्वारा सेतु वंधाय कर ससैन्य आप लङ्का मे जाइयेगा" । इतना कहकर समुद्र अन्तर्धानहुआ ।

नलने एक सौ योजन लम्वा और दश योजन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चौडा सेतु वांधनेसे श्रीरामचन्द्रजी ससैन्य लङ्का मे जाकर रावण को वध किया और सीताका उद्धारकर, अगस्त्यजी के वचनानुसार पाप निवृत्ति के लिये गन्धमादन पर्वत मे आय आपने नामसे शिवलिङ्ग स्थापन किये । वहि रामेश्वर क्षेत्र है, जंहापर दर्शन मात्र हि जीवों का पातक महापातकादि समस्त पाप का मोचन होता है ।

जंहा से सेतु सुरु हुआ उसको सेतुमूल कहता है। सेतुमूलसे रामेश्वर क्षेत्र तक वहुत तीर्थ है, उसमे २४ तीर्थ प्रधान है;– १ चक्रतीर्थ, २ वेतालवरदतीर्थ, ३ पापविनाशन, ४ सीतासर, ५ मङ्गलतीर्थ, ६ अमृत-वापिका, ७ ब्रह्मकुण्ड, ८ हनुमानकुण्ड, ९ अगस्त्य तीर्थ, १० रामतीर्थ, ११ लक्ष्मणतीर्थ, १२ जटातीर्थ, १३ लक्ष्मीतीर्थ, १४ अग्नितीर्थ, १५ शक्रतीर्थ, १६ शिवतीर्थ, १७ शंखतीर्थ, १८ यमुनातीर्थ, १९ गङ्गा-तीर्थ, २० गयातीर्थ, २१ कोठितीर्थ, २२ साध्यामृत-तीर्थ, २३ सर्वतीर्थ अथवा मानसतीर्थ, २४ धनुष्कोटि-तीर्थ। औरभि वहुत तीर्थ है जीसमे पापमोचन होता, उसमे क्षीरसरोवर. कपितीर्थ, गायत्री और सरस्वती, ऋणमोचन, सेतुमाधव आदि तीर्थ श्रेष्ठ है" ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

॥ चक्रतीर्थ ॥

[साउथ इण्डियन रेलवे का रामनाद ष्टेशन मे उतारके उत्तर दिशा मे ९ मील जाय देवीपत्तन ग्राम के पास समुद्र पर नवपाषाण मे स्नान करके धर्मतीर्थ अथवा चक्रतीर्थ मे स्नान करना चाहिये । वहांसे फिन रामनाद ष्टेशन मे आय दक्षिण दिशा मे ८ मीलपर तिरुपुलानि ग्राम मे चक्रतीर्थ मे स्नान कर विष्णुभगवान का शयान- मूर्ती आदिकेशवादि दर्शन करना उचित है । इसिको दर्भशायन कहता है । तिरुपुलानि ग्रामसे २ माइल पर समुद्र मे स्नान करना चाहिये । वहां से सेतु सुरु होनेसे उस स्थानको आदिसेतु कहता है । यहं से सेतुका आकार ठिकसे मालुम होता । दर्भशायन से देवीपत्तन तक सेतुका विस्तार है । दर्भशायन और देवीपत्तन मे चक्रतीर्थ पर स्नान करके पितरों को तृप्ति के लिये श्राद्धादि पिण्डदान करना कर्तव्य ।]

श्रीसुतजी कहनेलगे कि "हे मुनीश्वरो! यह चक्रतीर्थ सेतुवन्धका प्रथम तीर्थ है। इसका नाम पहिले धर्मतीर्थ था;—पुराकाल मे धर्म ने श्रीशिवजीकि तुष्ट करनेको मानसकर, कठोर तप करनेसे आशुतोष उनके तप मे प्रसन्न होकर वर देनेकी लिये साक्षात हुये। धर्म भि महादेवजीका दर्शन पाय परमानन्दहो प्रगाढ भक्ति से स्तुति किया । श्रीशिवजीने उनका स्तुतिमे प्रसन्न होकर वर लेने कहा। धर्मने प्रार्थनाकी कि हे भोलानाथ! मेइ आपका वाहन होने चाहताहुं, श्रीशिवजी ने धर्म का प्रार्थना स्वीकार करनेसे, धर्म वृष रुप धारण कर पिठपर चढा लिया।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीमहादेवजी भि महानन्द से उसपर चढके कहा कि "हे धर्म! तुम ने यहं पर तप करके मेरेको प्रसन्न किया इसिसे इसका नाम धर्मतीर्थ होगा । जो मनुष्य यह तीर्थ मे स्नान और इसका तीर पर दान, जप, तपादि कोइ धर्मकार्य करेगा वह अनन्त फलका अधिकारी हो कैलासको प्राप्त होगा" । इतना कहकर शिवजी ने उस वृष रुपी धर्मके उपर आरोहन कर कैलासको चले गये ।

अव चक्रतीर्थ नाम क्योंकर हुआ सो वर्णन करतेहैं;– "पुरा काल मे विष्णुभक्त गालवमुनि धर्मतीर्थ के तीरपर श्रीभगवानविष्णुजीका दर्शन मिलनेको लिये बहुतकाल ऐसा कठोर तप किया कि जिसमे शङ्ख-चक्र-गदा-पद्मधारी श्रीविष्णुभगवान उनका तपस्या मे दृढभक्ति देखकर श्रीलक्ष्मीजी सह मुनिके सम्मुख उपस्थित हुआ । गालव मुनिने जगन्नाथका दर्शन पाय अत्यन्त आनन्दित हो प्रेमसे स्तुति करने लगा । उनका स्तुति शुनकर नारायण अतिशय प्रसन्न हो प्रेमसे आलिङ्गन देके कहा कि "हे गालव ! तुम्हारा तपसे मेइ बहुत सन्तुष्ट हुआ, तुम इछानुसार वर माङ्ग;" गालवमुनिने प्रार्थनाकी कि "हे लक्ष्मीपते ! हम आपका साक्षात्

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दर्शनसे चरितार्थ हुं; आपका पास यहमेरा प्राथनाहै कि "आपका पदारविन्दमे प्रगाढ भक्ति रहे"। श्रीभगवानने कहा कि "हे मुने! मेरेपर तुम्हारा दृढभक्ति रहेगा और अन्तमे वैकुण्ठको प्राप्त होगा; अव तुम इसि तीर्थपर निवास करते रहो। यह धर्मतीर्थ समस्त पाप नाशकारी है"। इतना कहकर नारायण अन्तर्धानहुये।

गालवमुनि बहुत दिन उस तीर्थपर श्रीविष्णुजी का पूजा करते रहे। एकदिन मुनिने श्रीभगवानजीका ध्यानमे मग्न थे, इस समय एक राक्षस, जो दुर्दमनाम गन्धर्व थे, और जिसका कूकर्म देख वशिष्ठमुनिने षोलहवर्ष केलिये शाप दियेथे, वह भुखसे कातर होकर मुनिको पकडा, ध्यानरत मुनि यह विपद मे भगवान विपदवारणको स्मरणकरते हिं अन्तर्यामी नारायण उनका उद्धार केलिये सुदर्शन चक्रको भेजा, सुदर्शन चक्रने धर्मतीर्थ पर आय राक्षसको संहार कर मुनिको रक्षाकिया; वह राक्षसरूपी दुर्दमनामक गन्धर्वभि षोलह वर्षका अन्तमे मुक्त होकर सुदर्शनके आज्ञासे स्वर्ग को चला गया। गालवमुनिने सुदर्शन चक्रको दृढ भक्तिसे स्तुतिकरनेमे सुदर्शन प्रसन्न हो कहा कि "हे मुने! आपका विपद जानकर श्रीविष्णुभगवानजीने हमको भेजा; अवसे हम यहंपर निवास करुंगा, आप

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

निर्भय होकर तपस्या किजिये, और आजसे यह तीर्थका नाम चक्रतीर्थ होगा। यहंपर जो स्नान और पितरों केलिये पिण्डदानादि करेगा सो अपने वंशके समस्त मनुष्य और पितरों सहित वैकुण्ठको प्राप्तहोगा" इतना कहकर सुदर्शन चक्रने धर्मतीर्थमे अन्तर्धान होगया।

श्री सुतजी कहते हे कि "हे मुनिगणो! यह चक्रतीर्थ पूर्वदिशा मे देवीपत्तन और पश्चिमदिशा मे दर्भशायन तक विस्तारित थे, परन्तु पुराकाल मे जब पहाडोंका पक्ष था, और उडते उडते जंहातंहा गिरनेसे बहुत ग्राम, मनुष्य, पशु, पक्षी आदि विनष्ट होता रहा, तब देवराज इन्द्रजीने कोपान्वित हो, पहाडोंका पक्ष कटनेसे बहुत पर्वत समुद्र मे गिरा और कोइ कोइ चक्रतीर्थ का भिन्न भिन्न स्थान मे गिरनेसे बीच बीच मे बिभिन्न हो गया।

कोइ समय ब्रह्माजीके सभा मे अलम्बुषा नाम्नी अप्सराका, नृत्य करनेको समय नीम्न-वसन वायु से स्थानच्युत होनेपर सबदेवताओंने सरमके मारे आंख मुदलिया किन्तु विधुम नामक वसुने उनकी स्त्रीअङ्ग देख काम के वश हो अति उत्फुल्ल होने से ब्रह्माजीने उनका यह कूचाल देख कोपान्वित हो शाप

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दिया कि "हे विधुम! तु जैसा कामातुर मनुष्यकेमाफिक कूव्यवहार किया तैसा मनुष्यजन्म लेकर मर्त्त लोकमे निवास करते रहेगा; और यह अप्सरा तेरा वनिता होगी" उन दोनोने यह शाप शुनकर अति कातर हो ब्रह्माजी के चरणों पर पतित हो प्रार्थना किया कि "आप कृपाकर अपराध क्षमा किजिये" उनका कातरता देख दया परबश हो ब्रह्माजीने कहा कि "हे विधुम! मेरा वचन कभु असत्य नाहि होगा; तव तुम दोनोने मनुष्यलोक मे राजा राणी हो वहुत काल राजत्व कर अन्तमे दक्षिण समुद्र के तीर पर चक्रतीर्थ मे स्नान करनेसे यह शापसे मुक्त होगा" ब्रह्माजी के यह आदेश पाय, विधुम सहस्रानिक नाम राजा और अलम्बुषा मृगावती नाम्नी राणी हो मर्त्तमे जन्म लेके वहुकाल राजत्व कर शेषावस्थामे आपन पुत्र उदयन को राज्य देके चक्रतीर्थमे जाय स्नान करनेसे दोनोने मुक्त हो स्वर्ग को चला गया। इस तीर्थ मे स्नान करनेसे पाप मुक्त हो अवश्यहि स्वर्ग को प्राप्त होता है।

पुराकालमे देवी भगवतीने संग्राम कर महिषासूर को व्याकुल करनेसे महिषासूरने भयभीत हो वह चक्रतीर्थ मे प्रवेश कर छिप गये थे, परन्तु देवीने

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वहिं जाकर उनको वध की थी । इसिसे इस स्थान का नाम देवीपत्तन अथवा देवीपुर । यहंसे श्रीरामचन्द्रजी आपना हाथसे नवपाषाण स्थापन कर सेतु सुरु किये थे इसलिये यह स्थान को सेतुमूल भि कहता है । यहं पर नलने एक सिंहासन वनाया था जिसमे श्रीरामचन्द्रजी उपवेशन करते थे । पहिले नवपाषाण पर समुद्र मे स्नान कर पिछे चक्रतीर्थ मे स्नान और पिण्ड दानादि करके श्रीरामचन्द्रजीके सिंहासन को प्रणाम करनेसे नरक वास नहि होता । दर्भशायन मे भि चक्रतीर्थ मे स्नान और पिण्ड दानादि करनेसे सर्वविध पातक महापातकका नाश होता है । इस माहात्म्यको जो पाठ अथवा श्रवन करे सो चक्रतीर्थ मे स्नान का फल पाय" ।

॥ वेताल वरद तीर्थ ॥

[साउथ इण्डियन रेलवे का माण्डपम ष्टेशन से ४ मील दक्षिण दिशा मे यह तीर्थ है । इस तीर्थ मे स्नान करके पितृलोगोंका तृप्ति के लिये पिण्ड दानादि कर्तव्य ।]

श्रीसुतजी कहने लगे कि "चक्रतीर्थ मे स्नान कर वेतालवरदतीर्थको जाना चाहिये । इस तीर्थ मे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्नानकर सुदर्शन नामक विद्याधर-कुमार वेताल-पनासे मुक्त हुआ था;—कोइ समय गालव मुनिका कन्या आपने पिताके लिये वनमे पुष्प चयन करति थि इस अवसर मे सुदर्शन और सुकर्ण नामक दो विद्याधर-कुमारों ने उनकी रुप देखकर मोहित हो गया; सुदर्शन कामान्ध होकर उस कन्याकी पकड-नेसे, कन्या पुकारके अपने पिताको बोलाया। गालव मुनिने शीघ्रहि वहांपर आकर कन्याको रक्षा की और क्रोधकर सुदर्शन को शाप दिया कि "तुम मनुष्य योनी मे जन्म ग्रहन कर वेताल हो जायगा" और सुकर्ण के कहा कि "इसके पास खाडा हो मना नकर सहानुभुति किया इसलिये तुमि मनुष्य होके मर्त्त-लोक मे वास करोगे"। यह शाप शुनकर दोनो भ्राताओंने गालव मुनिके चरणोंपर गिरे प्रार्थना की कि "हे मुनिराज! आप कृपाकर हम दोनोको क्षमा किजिये" परन्तु गालव मुनिने कहा कि "मेरा वचन मिथ्या हो नहि सक्ता तुम दोनोको मर्त्तलोक मे जाने होगा और बहुकाल वासकर जिस समयमे विज्ञसि-कौतुक नामक विद्याधर-गुरुका साक्षात् मिलेगा उसि ससय शाप मोचन होगा"। अनन्योपाय हो दोनो भ्राताओंने गोविन्दस्वामी नामक एकब्राह्मण का

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

घरमे जन्म लिया। अनन्तर कुछ दिनके वाद सुदर्शन ने वेताल हो गया, और मांस रुधिर आदि जघन्य पदार्थ खाता फिरता कपालस्फोट नाम धार वेताल का राजा नरास्थिभूषण का सेनापति वन गया; और थोडाहि दिनके वाद चित्रसेन गन्धर्व के साथ युद्ध करके नरास्थिभूषण निहत होनेसे, वेतालों का राजा हुआ। सुकर्ण काशी के राजा प्रतापमुकुटके पास रहते समय एकदिन वह वेतालका राजा कपालस्फोटका सरोवर मे सुवर्ण कमल तोडनेसे, कपालस्फोठ का साथ घोर विवाद होता रहा, इसि अवसर मे विद्याधर-गुरु विज्ञप्तिकौतुक वहिं पर आये। उनके दर्शन पातेहि सुकर्ण आपन पूर्वदेह प्राप्त होकर विद्याधर-गुरुका वहुत स्तुति किया। गुरुने प्रसन्न हो कहा कि "हे सुकर्ण! तुम जिसका साथ कलह कर रहे हो वह तुम्हारा भाइ सुदर्शन है; गालव मुनिके शाप से तुम दोनोंने मनुष्य हुये थे, और तुम्हारा भाइ मनुष्य से बेताल होगया। मेरा दर्शन तक तुम्हारा शाप था इसि लिये हमको देखतेहि तुम शाप मुक्त हो पूर्व देह प्राप्त हुआ। दक्षिण समुद्र के तीरपर चक्रतीर्थ का दक्षिण भागमे एक तीर्थ है, उसमे तुम्हारा भाइ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सुदर्शनको स्नान करानेसे उनका भि शाप मोचन होगा" । यह वात शुनकर सुकर्णने सुदर्शनको उस तीर्थपर लेजाय स्नान करातेहि पूर्वावस्था प्राप्त हुआ; और दोनो भाइ अपने गुरु विज्ञप्ति कौतुक के साथ विमानपर वैठ स्वर्गको चला गया । इसि कारण उसि दिनसे इसतीर्थका नाम वेतालवरद हुआ । इस तीर्थ मे जो आदमी स्नान करेगा सो पातक महापातक से मुक्त होकर स्वर्गको प्राप्त होगा । इस माहात्म्यकी जो पाठ अथवा श्रवन करे सो इस तीर्थका स्नान फल पाय" ।

॥ पाप बिनाशन तीर्थ ॥

[माण्डपम ष्टेशनका नगिज दक्षिण भाग मे यह तीर्थ है । यहंपर स्नान कर पितरों को तृप्ति के लिये पिण्ड दानादि करना चाहिये । माण्डपाम ष्टेशन से पामन ष्टेशन का वीचमे समुद्रपर रैलवे कोम्पानो का पुल देखने लायक है । माण्डपम क्याम्प ष्टेशनका पास सिलोन जानेवाला यात्री लोगोंका स्वास्थ्य परीक्षा होता है ।]

श्रीसुतजी कहतें है कि "वेतालवरदतीर्थ मे स्नान करके सेतु रुप गन्धमादन पर्वत पर पापविनाशनतीर्थमे जाना चाहिये । गन्धमादन पर्वत पहिले

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

समुद्रके वीच मे था । इसि कारण मनुष्य लोगोंने जाने नहि सक्ता था केवल वहांपर देवता, मुनि, गन्धर्व, किन्नर आदि समस्त नियत वास करते है । यह अति पूण्य स्थान, इसका दर्शन मात्रहि समस्त पापका नाश होजाता, और यहंपर धर्म-कार्य करनेसे स्वर्ग को प्राप्त होता है । नलने सेतु वन्धनेको समय यह गन्धमादन पर्वत, सेतुके वीच मे आनेसे मनुष्यलोग जाने आने लगे । उसि गन्धमादन पर्वत पर पापविनाशनतीर्थ मे स्नान करनेसे समस्त पाप नाश होकर मुक्ति मिलता है ।

पूराकालमे दृढमति नामक एक शुद्र तप करनेका मानस कर हिमालयाचलवासी परम तपस्वी ब्राह्मणोंका आश्रम मे उपस्थित हो साष्टाङ्ग प्रणाम कर कहा कि "हे तपोधन! मेइ शुद्र हुं, परन्तु मेरा तप करनेका अत्यन्त अभिलाष हुआ । अतएव आपलोगोंने कृपापूर्वक दीक्षा देकर मेरेको सेवक वना लिजिये" । ब्राह्मणोंने कहा कि "शुद्र को दीक्षा देना महापाप है; ब्राह्मणका सेवा करनाहि शुद्रका तप है" । यह वचन शुनकर दृढमतिने निराश हो, वहांसे थोडा दूरमे जाय एक आश्रम वनायकर तप करने लगा। एक दिन सुमति नामक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

एक मुनि उनके आश्रममे आये; दृढमतिका दृट भक्ति से प्रसन्न हो प्रत्यह आते जाते थे, और उनको दीक्षा देकर वैदिक मन्त्र आदि सव शिक्षा देनेसे अन्यान्य मुनिने सुमति को त्याग किया । अनन्तर सुमति मुनिका मृत्यु होनेसे शुद्रका संसर्ग हेतु पापसे कइ कल्प नरक भोगकर नाना योनीमे जन्म लेते हुये पिछे एक ब्राह्मणका घरमे जन्म हुआ । किन्तु वह पापका अन्त न होनेसे उनपर ब्रह्मदैत्यका आवेश हुआ । उनका पिताने, पुत्तका यह हाल देख दुःखित होकर अगस्त्यमुनिके पास जाय मिनति पूर्वक सव हाल कहनेसे अगस्त्यजीने कृपाकर उपदेश किया कि "दक्षिण समुद्रके वीच गन्धमादन पर्वतपर पापविनाशनतीर्थ मे स्नान करनेसे उनका पाप निवृत्ति होगा" । मुनि का यह कृपादेश पाय पुत्तको लेजाकर पापविनाशनतीर्थ मे स्नान कराते हि आरोग्य हो गया । दृढमति शुद्र भि वहुकाल नरक भोग कर नाना योनिओं मे जन्म लेते हुपे पिछे गीध जन्म पाय गन्धमादन पर्वत मे रहनेका समय एक दिन जल पिनेको लिये पापविनाशन तीर्थ मे गया, तीर्थ जल स्पर्श होनेसे उसका पाप मुक्त हो स्वर्गको प्राप्त हुआ । यह तीर्थ मे स्नान

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

करनेसे समस्त पापका नाश होता है । इस माहात्म्य को जो पाठ अथवा श्रवन करे सो इस तीर्थ मे स्नान का फल पाय" ।

॥ सीतासर तीर्थ ॥

[तांगाचिमठम ग्रामके उत्तर दिशामे आधा मील पर यह तीर्थ हैं । परन्तु यह तीर्थ संस्कार न होनेसे बालुसे आधा भर गया है । और जल भि समय समय नहि रहता है । यह तीर्थका थोडा पूर्व दिशामे समुद्रके किनारापर विल्लुनि नाम एक तीर्थ है । इसिका प्रवाद ऐसा है कि जिस समय श्रीरामचन्द्रजी सीताको उद्धार कर यहंपर आयेथे, उस समय सीताजीकी पिपासा का शान्तिके लिये, मिठाजलका अभाव देख धनुषद्वारा मेदिनी विद्धकर पातालसे मिठाजल निकाला था अद्यापि यह मिठाजलके कूप समुद्र के जलके अन्दर विराजित है । परन्तु भादों अशोज महिनेमे समुद्रके जल उतार जानेसे देख पडता है ।]

श्रीसुतजी कहतें है कि "हे मुनिश्रेष्ठ ! पाप विनाशन तीर्थ मे स्नानकर सीतासर तीर्थ मे स्नान करना चाहिये । यह तीर्थ समस्त देवता, गन्धर्व, मुनि आदि द्वारा सेवित । यहं पर स्नान करके इन्द्रजी ब्रह्महत्या पापसे मुक्त हुआ; पुराकालमे शुचिमुनिके औरससे सुशीला नाम्नी राक्षसीकी गर्भ मे कपाला-भरण नामक राक्षस उत्पन्न हुइ । वह अति प्रतापशाली

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

था, इन्द्र भिन्न समस्त सूरगणोंका अजेय होकर बैजयन्त नगरका राजा हुआ। अनन्तर एकदिन कपालाभरण सूरपुरी अधिकार करनेका मानस कर देवताओंसे संग्राम करनेको समय इन्द्रजीका हाथसे निधन प्राप्त हुआ। इसिलिये इन्द्रजीको ब्रह्महत्या का पाप लगा था। ब्रह्माजीका कृपासे इन्द्रजीने सीतासर तीर्थमे स्नान करके पाप मुक्त हुआ। यह अति पबित्र तीर्थ; श्रीरामचन्द्रजीका सन्देह भञ्जन के लिये सीताजीने अग्नि-परीक्षा देकर इस कुण्डमे स्नान की थी। इस तीर्थमे स्नान करनेसे अति महापातक भि मुक्त होता है। इस माहात्म्य को जो पाठ अथवा श्रबन करे सो इस तीर्थमे स्नान करनेका फल पाय"।

॥ मङ्गल तीर्थ ॥

[रामेश्वरजीसे ४ मील पश्चिम दिशामे तांगाचिमठम ग्रामके नगिज यह कुण्ड है। तांगाचिमठम रेलवे ष्टेशनसे उत्तर दिशामे १ मीलसे कुछ उपर होगा। इस कुण्ड का जल मिठा है, परन्तु संस्कार के अभावसे कमलके लता और पत्रमे कुण्ड भर गया। यहंपर सङ्कल्प कर स्नान करना उचित है।]

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीसुतजी कहतें है कि "हे मुनिराज! सीता-सर तीर्थमे स्नान कर मङ्गल तीर्थमे स्नान करना अवश्य कर्त्तव्य । यहंपर स्नान करनेसे दरिद्रता नाश होकर वहुत ऐश्वर्य्य मिलता है । पुराकालमे मनजव नामक एक राजा धनमद्मे मत्त हो प्रजापीडन करते थे, इसि समय गौलव नामक एक अन्य राजा उनका राज्य आक्रमण करके जित् लेनेसे, मनजव राजाने पराजित हो अपना स्त्री, पुत्र सह बनको जाय बहुत कष्टमे पडा । दैबयोग एकदिन परम तपस्वी पराशर मुनि वह बनमे आनेसे, मनजव राजाने दृढ भक्ति के साथ उनका पूजन करके आपना दुःखका समस्त निबेदन किया । परम दयालु पराशर मुनिने राजाका दुःख देख, राज्य पुनः प्राप्ति केलिये उनको मङ्गल तीर्थमे स्नान करनेको उपदेश किया । मुनिके उप-देशानुसार मङ्गल तीर्थमे जाय तिन माहिने दृढ भक्ति से स्नान करके श्रीशिवजीका आराधना करनेमे वह कुण्डमेसे संग्राम करनोपयोगी बहु अस्त्र, सैन्य, हाथी, घोडा और बहुत धन मिलनेसे पुनराय आपने राज्यमे जाय गौलव को परास्त कर बहुकाल राजत्व करके अपने पुत्रको राज्य देकर अन्तमे पत्नि सहित मङ्गल तीर्थमे बहुदिन तप कर देह त्याग किया, और

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उनके स्त्री भि उनके साथ सहमृता हुइ। तीर्थका माहात्म्यसे मनजव राजा सस्त्रीक शिवलोकको प्राप्त हुआ। इस तीर्थमे स्नान करनेसे शत्रुभय और दरिद्रता नाश हो बहुत ऐश्वर्य्य भोग कर अन्तमे शिवलोकको प्राप्त होता। इस माहात्म्यको जो भक्तिसे पाठ अथवा श्रवन करे सो इस तीर्थमे स्नान करनेका फल पाय"।

अमृतबापिका तीर्थ

[मङ्गलतीर्थ का थोडाहि पूर्व दिशामे एकान्त रामनाथ स्वामीका एक मन्दिर है। उसमे रामचन्द्र, सीता, लक्ष्मण और हनुमानजीका मूर्ति विराजित हैं। मन्दिर वृहत, परन्तु संस्कार नहि होनेसे स्थान स्थान भग्न हो गया। इसि पुरीके भितर मे अमृतवापिका कूप है। इस तीर्थमे सङ्कल्प करके स्नान करना चाहिये।]

श्रीसुतजी कहतें हैं कि "तदनन्तर एकान्त रामनाथ क्षेत्रके भितर अमृतवापिका तीर्थमे स्नान करना चाहिये। एकसमय जब सेतु निर्म्मान कार्य्य होता रहा; श्रीरामचन्द्रजी इसि स्थान पर लक्ष्मण, सुग्रीव, हनुमान, बिभीषण आदिके साथ रावण को बध और सीताजी को उद्धारके लिये एकान्तमे मन्त्रना करते रहे, किन्तु समुद्रका अति भीषण गर्जन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

होनेसे एकको कथा दुसरेके कर्णगोचर नहि होता रहा; इसि लिये श्रीरामचन्द्रजी समुद्रके उपर अत्यन्त कोप करनेसे समुद्रका गर्जन बन्ध हो गया । उसि दिनसे इसि क्षेत्रका नाम एकान्त रामनाथ हुआ अव तक एकान्त-रामनाथ क्षेत्रका सन्निहित समुद्रमे कल्लोल अथवा तरङ्ग नहि है ।

इसि क्षेत्रमे अमृतवापिका नामक तीर्थ है; जिसमे स्नान करनेसे मोक्ष मिलता है । पुराकालमे अगस्त्य मुनिके भ्राता श्रीशिवजीकी सन्तोष केलिये हिमालय गिरिमे बहुकाल अति कठोर तप करनेसे शिवजी सन्तुष्ट होकर बर दिया कि "गन्धमादन पर्वत पर अमृतबापिका तीर्थमे स्नान करनेसे तुम्हारा मुक्ति होगा" । श्रीशिवजीका कृपा आज्ञासे मुनिने उस तीर्थमे जाय तिन वर्ष अति भक्तिसे तप किया । तिन वर्षके अन्तमे समाधि लगाय प्राणत्याग करनेसे तीर्थ-माहात्म्य हेतु मुनिको मोक्ष मिल गया । यह तीर्थमे स्नान करके एकान्त-रामनाथको दर्शन करनेसे अति महापातक होनेसे भि मुक्तिकी अधिकारी होता है । इस माहात्म्यको जो पाठ अथवा श्रबन करे सो इस तीर्थमे स्नान करनेका फलको प्राप्त होता है ।

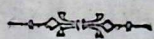

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

॥ ब्रह्मकुण्ड तीर्थ ॥

[रामेश्वर धामका उत्तर दिशामे आधा मीलपर यह तीर्थ है । बृहत मयदानका बीचमे एक कुण्ड है, परन्तु संस्कार नहि होनेसे कुण्ड मिट्टीमे भर जाता है । बर्षाकाल भिन्न अन्य समयमे जलभि रहता नहि । यहंका जमीन खोदनेसे सफेद मिट्टि निकलता है; वहि ब्रह्माजीकी यज्ञका भस्म । इस भस्मको धारण करना यात्रीलोगोंका अवश्य उचित । यह भस्म बजारमे बिक्री भि होता है ।]

श्रीसुतजी कहतें है कि " तदनन्तर ब्रह्मकुण्ड-तीर्थमे स्नान करना अवश्य कर्त्तव्य । कोइ समय अपने अपने प्राधान्यके लिये ब्रह्माजीके साथ बिष्णु-जीका घोर तर्क हुआ; ब्रह्माजी कहें कि " मेइ जगत् सृष्टि किया इसिसे हम सबसे बडा है; और बिष्णुजी कहें कि " मेइ जगत् रक्षा करता हुं इसिलिये मेइ सबसे प्रधान " । परस्पर ऐसा बितण्डा होनेका समय अनादि अनन्त एक ज्योतिर्मय लिङ्ग उभयके सामने प्रकठ हुआ । वह लिङ्ग, दोनोंने देखके बिस्मयाबिष्ट होकर बिचार किया कि जो यह लिङ्गका आद्यन्त प्रकाश करने सामर्थ्य होगा, वहि सबसे प्रधान गिना जायगा इतना बिचार कर ब्रह्माजी आदि और बिष्णुजी अन्तका सीमा निर्देश करनेको लिये चले।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बहुकाल अनुसन्धान करके किसिको पत्ता नहि लगा; परन्तु ब्रह्माजीने आय कहा कि "मेइ इस लिङ्गका अग्रभाग देख आयाहुं"। यह मिथ्याबचनसे शिवजी कोपान्वित हो, ब्रह्माजीको कहा कि "मेरा सामने तुमने असत्य कथन किया इसिसे जगत्मे कोइ तुम्हारा पूजा नाहि करेगा"। यह शुनकर ब्रह्माजी अति व्याकूल हो शिवजीका स्तुति करने लगा। ब्रह्माजीके स्तुतिमे शङ्करजी प्रसन्न होकर कहा कि "हे ब्रह्माजी! गन्धमादन पर्बतमे यज्ञ करनेसे यह पापका निबृत्ति होगा"। शिवजीके आदेश अनुसार ब्रह्माजी बहुकाल गन्धमादन पर्बतमे यज्ञ करनेसे शिवजी साक्षात होकर कहा कि "तुम्हारा पाप मुक्त हुआ, अबसे सब कोइ तुम्हारा पूजा करेगा, परन्तु प्रतिमामे होगा नहि, और इस स्थानका नाम ब्रह्म-कुण्ड होगा, इस तीर्थमे स्नान और यज्ञ-कुण्डका भस्म धारण करनेसे, महापातकका नाशहो मुक्ति पावेगा" इतना कहकर शिवजी अन्तर्धान हुआ और ब्रह्मा-जीने शिवजीका कृपासे पाप मुक्त हो ब्रह्मलोकको चला गया। इस माहात्म्यको जो पाठ अथवा श्रबन करे सो इस तीर्थमे स्नानका फल पाय। इस कुण्डका भस्म ब्राह्मणको देनेसे भुमिदान का फल मिलता है"।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

॥ हनुमानकुण्ड तीर्थ ॥

[रामेश्वरधामके उत्तर भागमे यह तीर्थ है । संस्कारका अभावसे इस कुण्डमे भि सब समय जल नहि रहता है । कुण्डका पूर्व तीरमे हनुमानजीके एक छोटा मन्दिर और पश्चिमोत्तर कोनामे एक बडा मन्दिरमे एक शिव-लिङ्ग है । हनुमानजीका रुधिरसे यह कुण्ड बना था, इसलिये यहंका मिट्टी सब लाल है ।]

श्रीसुतजी कहें है कि "ब्रह्मकुण्डमे स्नानकर हनुमानकुण्डमे स्नान करना चाहिये । रामचन्द्रजी जब रावणको बधकर गन्धमादन पर्बतमे आये थे उसि समय हनुमानजी आपन नाम से इस तीर्थ बनाया था । साक्षात् रुद्रदेव द्वारा सेबित यह तीर्थ मे स्नान करनेसे नरक भोगने नाहि होता और अन्तमे शिवलोकको प्राप्त होता है । इस कुण्डमे बिधिपूर्बक स्नान, दान, तप, और यज्ञादि करके अपुत्रक धर्मसख नामक राजा एकसौ पुत्रके पिता हुआ था और अन्तमे वहिं पर तप करते हुये मृत्यु होनेसे शिवलोकको प्राप्त हुआ । इस तीर्थमे स्नान करनेसे दरिद्रता और महापातकादिका नाश हो अन्तमे मुक्ति पाता है । इस माहात्म्यको जो पाठ अथवा श्रबन करे सो निष्पाप हो अन्तमे देबलोक मे बास करता है ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

॥ अगस्त्य तीर्थ ॥

[रामेश्वर वस्तिके उत्तर-पूर्व कोंनामे समुद्रका पश्चिम भाग यह तीर्थ कुण्ड है। यह कुण्डका पश्चिम तीरपर एक छोटासी मन्दिरमे अगस्त्य मुनि और उनके पत्नी लोपामुद्राकी और एक गणेशजीके मूर्ति है। यहंपर सङ्कल्प कर स्नान करना चाहिये]।

श्रीसुतजी कहने लगे कि "हे मुनिगणों! हनुमानकुण्डमे स्नान करके अगस्त्य तीर्थमे स्नान करना चाहिये। पूराकालमे जब बिन्ध्यगिरि मदगर्बसे बढने लगे तब शिवजीकी आज्ञानुसार अगत्यजीने अपने चरणोंसे दबाय बिन्ध्यगिरिका गर्व खर्व कर दक्षिण समुद्रके तीर रामेश्वर धाममे आपन नामसे तीर्थ बनाय अपने पत्नी लोपामुद्रा सहित बास करके तप करता रहा।

कोइसमय राजा स्वनयका रुपवती कन्या प्रतीज्ञाकी थि कि "चतुर्दन्त विशिष्ट श्वेतबर्ण हस्तीमे आरोहण कर जो पुरुष आवेंगे वहि मेरा पति होगा"।

दीर्घतपा मुनिके पुत्र कक्षीबान् आपने गुरुके आज्ञा अनुसार अगस्त्य तीर्थमे जाय तिनवर्ष दृढ भक्तिके सहित तप करनेसे तीर्थका प्रभावमे चतुर्दन्त विशिष्ट श्वेतकाय हस्ती उस तीर्थमेसे निकल कर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उनके सम्मुख आनेसे गुरुदेवकी आदेशानुसार उस-पर आरोहण कर स्वनय राजाके कन्याकी बिबाह किये थे। यह तीर्थ अति उत्तम है। इस तीर्थ मे स्नान करनेसे दरिद्रता नाशहो संसारमे उत्तम सुख भोग-कर अन्तमे मुक्ति पाते है। इस माहात्म्यको जो पाठ अथवा श्रवन करे सो इस तीर्थमे स्नान करनेका फल पाता है"।

॥ राम तीर्थ ॥

[रामेश्वरजीका देवालयके पश्चिम थोडाहि दूरमे यह तीर्थ है। चारों और पत्थरसे घाट बन्धा हुआ यह एक बडा पुष्करिणी है। इस कुण्डका बीचमे पत्थरसे बना हुआ एक मण्डप है। इस तीर्थका पश्चिम तीर पर एक मन्दिरमे रामचन्द्रजी आदिके मूर्ति है। प्रतिवर्ष श्रीराम-नाथजीका प्रतिनिधि-मूर्तिकी सोवारि करके इस तीर्थमे स्नान करानेको लातें है और उस समय यहंपर मेला होता है। इस तीर्थमे संकल्पकर स्नान करके रामचन्द्र आदिके दर्शन कर पिण्डदानादि कर्त्तव्य।

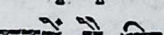

श्रीसुतजी कहतें है कि "हे मुनिश्रेष्ठ! तद-नन्तर राम तीर्थमे स्नान करना चाहिये। इस तीर्थ स्वयं श्रीरामचन्द्रजीने स्थापित किया है। यह तीर्थमे स्नान और धर्मकार्य्य करनेसे अक्षय फल मिलता है। बिष्णुभक्त सुतीक्ष्ण मुनिने इस तीर्थमे बहुकाल तप करके सर्वसिद्धि प्राप्त हुआ था।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कुरुक्षेत्रका युद्धको समय द्रोणाचार्य्यके श्रस्त्र-त्याग कारानेके लिये श्रीकृष्णजीका मन्त्रणानुसार राजा युधिष्ठिरने "अश्वत्थामा हत इति गज" कहनेसे द्रोणाचार्य्यने "अश्वत्थामा हत" मात्र शुनतेहि अस्त्रत्याग कर दिये थे; पिछे "इति गज" शुना परन्तु पुनः अस्त्र नउठाया कारण उनका प्रतीज्ञा था कि "पुत्रका मृत्यु संवाद कर्णगोचर होनेसेहि अस्त्र त्याग करुङ्गा और कोइ कारणसे एक दफे अस्त्र त्याग करनेसे फिन वह अस्त्र नउठाउङ्गा"। इसि कारणसे पुनर्बार अस्त्र नग्रहनकर अपना शरीरको त्याग दिया। धर्मपुत्रने छलसे मिथ्या बचन कहा इसिलिये उनका पाप होनेसे अत्यन्त दुःखित हुये, इसिसमय श्रीबेद-व्यासजी वहिंपर आये और तपोबलसे राजाका दुःखित होनेका कारण अबगतहो कहाकि "हे राजन! दक्षिण समुद्रके तीरपर रामेश्वर-क्षेत्रमे रामतीर्थ नामक एक सरोवर है, उसमे बिधिपूर्वक स्नान करनेसे तुम्हारा यह पापका मोचन होगा"। श्रीबेदव्यासजीका यह कृपादेश पाय राजा युधिष्ठिरने महा आनन्दित होकर अपने भ्राताओं सहित राम तीर्थपर जाय एक महिना उस तीर्थमे बिधिपूर्बक स्नान, तप, जप, दान, ध्यान, और श्राद्धादि करनेसे; अकाश-वाणी हुइ कि "हे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

धर्मपुत्र! यह तीर्थका प्रभावसे तुम्हारा पापका मोचन हुआ, अब अपना राज्यमे जाय शान्तिमे राज-सिंहासनमे बैठ राजत्व करते रहो"। युधिष्ठिरने यह आकाश-बाणी श्रवनकर परम पुलकित हो भ्राताओं सहित अपने राज्यको चला गया। इस तीर्थका माहात्म्य देवताओंने भि वर्णन करने नहि सक्ता। यह तीर्थमे स्नानकर पिण्डदानादि करनेसे अति महा-पातकभि सद्गति पाते है। इस माहात्म्यको जो पाठ अथवा श्रवन करे सो यह तीर्थमे स्नान करनेका फल पाता है"।

॥ लक्ष्मण तीर्थ ॥

[रामतीर्थका किञ्चित् पश्चिम दिशामे, चारोंओर पत्थरसे घाट बंधा हुआ एक वृहत सरोवर है। इसिको लक्ष्मणतीर्थ कहता है। इसका भि बीचमे पत्थरसे बनाहुआ एक मण्डप है। प्रतिवर्ष रामेश्वरजीका प्रतिनिधि-मूर्तिको सोवारिमे लायके, नौकामे पारकर उस मण्डपमे स्थापन करके, नृत्यगीतादि सह उत्सव होता है। यह तीर्थमे मस्तक मुण्डन कर स्नान करके लक्ष्मणेश्वर महादेवको दर्शन और पितरोंको तृप्तिके लिये श्राद्ध पिण्डदानादि करना चाहिये। यह सरोवरका पूर्वोत्तर कोनामे लक्ष्मणेश्वर शिवलिङ्ग है।]

श्रीसुतजी कहनेलगे कि, "राम तीर्थमे स्नानादि कर लक्ष्मण तीर्थमे स्नान करना चाहिये। लक्ष्मण

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जीने यहतीर्थ आपन नामसे बनायकर यह सरोवरका तीरमे शिवलिङ्ग स्थापन किया था । यह तीर्थ ब्रह्म-हत्यादि महापातक हरनेहारा ।

पुराकालमे श्रीबलदेवजीने तीर्थ-यात्राके लिये निकलकर नानातीर्थ परिभ्रमन करके श्रीनैमिषारण्य मे आनेसे वहांके सब मुनिओंने उनको देख अपने अपने आसनसे उठकर उनका बहुत सम्मान किया; परन्तु सुत नामक मुनि गात्रोत्थानपूर्बक उनका सम्भाषणादि नहि करनेसे, श्रीबलदेवजीने क्रोधकर कुशद्वारा सुतमुनिका मस्तक छेदन कर दिया था; इसिलिये उनका ब्रह्महत्याका पाप लगनेसे, नैमिषा-रण्यवासी मुनिओंके उपदेशानुसार लक्ष्मण तीर्थमे स्नान और लक्ष्मणेश्वर शिवको पूजन करके ब्रह्महत्या पापसे मुक्त हुआ । इस तीर्थमे स्नानकर लक्ष्मणेश्वर शिवलिङ्गके दर्शन करनेसे दरिद्रता नाशहो संसार-बन्धनसे मुक्त होता और निष्पाप होकर मुक्तिको पाते है । यहंपर पिण्डदान करनेसे पितृलोगोंने परम परितृप्त होते है । इस माहात्म्यको जो पाठ अथवा श्रवन करे सो इस तीर्थमे स्नान करनेका फल प्राप्त होता है" ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

॥ जटा तीर्थ ॥

[रामेश्वरजीसे २ मील पूर्व-दक्षिण कोनामे यह तीर्थ है । इस कुण्डका जल अतिशय स्वच्छ और मिठा है। परन्तु संस्कारके अभावसे शैवाल दलसे कुण्ड भराहुआ है । यह कुण्डका दक्षिण तटपर एक मंदिर मे गणेशजीका मूर्ति और दो शिवलिङ्ग है । प्रति सोमवार यहंपर स्थानीय मेला होता। वहांपर जानेका वैल-गाडी रामेश्वरजीमे मिलता है। यह तीर्थमे सङ्कल्पकर स्नान करके पिण्डदानादि करना चाहिये।]

श्रीसुतजी कहतें है कि " तदनन्तर जटातीर्थ मे स्नान करना चाहिये। इसमे स्नान करनेसे चित्तकी शुद्धि होकर मोक्षको प्राप्त होता है। स्वयं श्रीशिवजीने अज्ञानीका ज्ञान प्राप्तिके लिये इस तीर्थ बनाया था। श्रीरामचन्द्रजी रावणको बधकर इस तीर्थमे आय अपने जटा धौत कीयेथे इसिलिये इसका नाम जटा-तीर्थ हुआ। इस तीर्थमे महातपस्वी भृगुजी, दुर्बासा जी, दत्तात्रेयजी, शुकदेवजी आदि मुनिओंने बिधि-पुर्बक स्नान करके चित्तशुद्धिके साथ ब्रह्मज्ञानको प्राप्त हुआ था। यह तीर्थमे स्नान करनेसे ऐश्वर्य्य, परमायू, ज्ञानादि सब बस्तुको प्राप्त होता है। इसका तटपर पिण्डदान करनेसे गयामे पिण्डदान करनेका समतुल्य होता है। यह तीर्थमे स्नानकर पिण्डदान करनेसे दरिद्रता, अज्ञानता और सर्बबिध महापातकादि नाश

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हो चित्तशुद्धिके साथ मुक्तिकि प्राप्ति होता । इस माहात्म्यको जो पाठ अथवा श्रवन करे सो यह तीर्थमे स्नान करनेका फल प्राप्त होता है" ।

॥ लक्ष्मी तीर्थ ॥

[रामेश्वरजीका देवालयके पूर्व प्रवेश-द्वारके दक्षिण भागमे यह तीर्थ है । चारों और घेरा हुआ इस कुण्डका पश्चिम वाजुमे लक्ष्मी माताकी एक छोटा मन्दिर और पूर्व वाजुमे प्रवेश-द्वार । यहं पर सङ्कल्प करके स्नान करना उचित ।]

श्रीसुतजी कहतें है कि "हे मुनिश्रेष्ट! जटा-तीर्थमे स्नान करके लक्ष्मीतीर्थमे स्नान करना चाहिये । यहंपर जिस कामना करके स्नान करेगा वहि बासना पूर्ण होता है ।

पूराकालमे राजा युधिष्ठिरने राजसूय-यज्ञ करनेका मानसकर श्रीकृष्णजीका अनुमति प्रार्थना करनेसे, श्रीकृष्णजीने कहा कि "राज-चक्रवर्त्ती नहोनेसे राजसूय-यज्ञका अधिकार नहि होता, इसलिये दिग्विजय करके समस्त राजाको अपना अधीन करना चाहिये । इसका एक उपाय कहता हुं;- दक्षिण समुद्रके तीर गन्धमादन पर्वतपर लक्ष्मीतीर्थमे स्नान कर-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नेसे बहुत ऐश्वर्य्य प्राप्त होता और शत्रुओंके शङ्का नहि रहता है" । श्रीकृष्णजीका यह उपदेश बाणी श्रवन कर धर्मपुत्रने अपना भ्राताओं सहित लक्ष्मी-तीर्थमे स्नान आदि कर बहुत ऐश्वर्य्य पाया था; तीर्थका प्रभावसे चारों भ्राताओंने चारों दिशाओंमे जाय समस्त राजाको पराजित कर बहुविध धन लानेसे राजसूय-यज्ञ हुआ था । देवताओंने यह तीर्थका सेवन कर बहु ऐश्वर्य्य प्राप्त हो देवारिओंका नाश करने सामर्थ्य हुआ था । इस तीर्थमे स्नान करनेसे समस्त कामना पूर्ण होता है, और समस्त दुःखका मोचन हो बहु सुखैश्वर्य्य भोगकर अन्तमे उत्तम गतिको प्राप्त होता। इस माहात्म्य को जो पाठ अथवा श्रवन करे सो इस तीर्थका स्नान फल प्राप्त होय" ।

॥ अग्नि तीर्थ ॥

[रामेश्वरजीके देवालयका ठिक सम्मुख पूर्व भागमे समुद्रपर यह तीर्थ है । यहं पर सङ्कल्प पूर्वक स्नान कर पिण्डदानादि करना चाहिये। तीरपर एक छाया-मण्डप है, उसिमे बैठ यात्रीलोगोंने श्राद्धादि कार्य्य करतें है।]

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीसुतजी कहतें है कि "तदनन्तर अग्नितीर्थ मे स्नान करना चाहिये । श्रीरामचन्द्रजी जब रावण को बधकर गन्धमादन पर्बतमे आय लक्ष्मीतीर्थकी तट पर रहने लगे, तब सीताजीकी पबित्रता निश्चय करनेका मानस कर अग्निदेवको आबाहन करनेसे, अग्निदेव समुद्रसे निकलकर श्रीरामचन्द्रजीके पास आय कहा कि "हे सीतापते ! सीताजीकी कोइ बातमे सन्देह नहि कीजिये; सीताजी साक्षात् लक्ष्मीमाता है, जिनकी सतीत्व-तेजसे रावण सवंश नष्ट हुआ; आप निःसन्देहसे सीताजीको ग्रहण किजिये" । इतना कहकर अग्निदेव अन्तर्धान होगये । अग्निदेवकी कथा अनुसार श्रीरामचन्द्रजीने आनन्दके साथ सीताजी को ग्रहण करलिया । जिस स्थानमे अग्निदेव निकला था, उसि स्थानको अग्नितीर्थ कहता है । इस तीर्थका ऐसा प्रभाव है कि इसमे स्नान करनेसे पिशाचपन भि छुट् जाता है ।

पूराकालमे पशुमान बैश्यका दुःष्पण्य नामक एक अति दुराचार पुत्र शैशबावस्थामे से प्रतिबेशी बालकोंको छलसे तालाव अथवा कुंयेके पास ढकेल कर फेंक देता था; इसिसे नगरके बहुत बालक हत्या हुआ । कुछ दिनके बाद वह दुष्पण्य पकडा गया

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

और राजाके आज्ञासे उसको नगरसे निकाल दिया। दुष्पण्य नगरसे निष्क्रान्त होकर बनको तरह चलते चलते उग्रश्रवा मुनिके आश्रममे पौंछा। स्वभावके दोषसे वहां भि उस मुनिका एक पुत्रको जलमे डुबाय कर हत्याकी, तब उग्रश्रबा मुनिने योगबलसे उनका कूकर्मको जानकर क्रोधसे उनको शाप दिया कि "तुमने जैसा जलमे डुबायकर बहुत बालककों मारा है, तैसा तुम्हारा भि जलमे प्राणान्त होगा और पिशाच हो जावोगे"। कुछ दिनके बाद मुनिजीके शापसे उनका समुद्रमे मृत्यु हुआ और पिशाच होगया। वह दुष्पण्यने, पिशाच होकर बहुकाल घुमते फिरते एकदिन अगस्त्य मुनिके आश्रमका पास जाय, पुकारके रोदन करते हुये, अपने कूकर्मका हाल सब कहने लगे। उनका आक्षेप शुनके दयापरबश अगस्त्य मुनिने आपन शिष्य सुतीक्ष्ण मुनिको, पिशाचका नामसे संकल्पकर स्नान करनेको लिये अग्नि-तीर्थपर भेजनेसे, सुतीक्ष्ण मुनि अग्नि-तीर्थमे आय पिशाचका नामसे संकल्पकर स्नान करके तीर्थजल लेजाय उनका शरीरमे छिटा देनेसे पाप मुक्तहो दिव्य देह धार स्वर्ग को चला गया। इस तीर्थमे स्नान करनेसे अति महापातकभि उद्धार होता है। इस माहात्म्यको जो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पाठ अथवा श्रवन करे सो इस तीर्थमे स्नान करनेका फल पाते है " ।

॥ शक्र तीर्थ ॥

[रामेश्वरजीकी देवालयका प्रदक्षीणके पूर्व बाजुका रास्तामे यह तीर्थ है । चारों और घेरा हुआ जिसमे केवाडभि लगी है । यह कुंएका जल खुब मिठा है । यहंपर सङ्कल्पकर स्नान करना उचित् ।]

श्रीसुतजी कहतें है कि " अतः पर शक्रतीर्थमे स्नान करना आवश्यक है । पुराकालमे अहिर्बुध्न्य नामक मुनि इस तीर्थमे तप करनेका समय राक्षसों आदि द्वारा पीडित होकर सुदर्शन-चक्रकी आराधना करनेसे सुदर्शनने आय सब राक्षसोंको मार मुनिका समस्त विघ्न दूर किया था, इसिसे इसका नाम चक्र-तीर्थ हुआ । इसका पहिले नाम मुनितीर्थ भि था । यह तीर्थमे अङ्गहीन मनुष्य स्नान करनेसे उनका हीन अङ्गका पूर्ण होजाता है ।

कोइसमय एक व्याधका वाणसे हरिहर नामक एक ब्राह्मणका दोनों पैर कट जानेसे इस तीर्थ मे स्नानकर, दोनों पैरकी पूर्णता प्राप्त हुआ था ।

और एकसमय देवताओंने, असूरोंके नाश

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

करनेको लिये, इस तीर्थमे यज्ञ करनेका समय दैवयोग सूर्य्यजी आपन दोनों हाथमे मन्त्रपूतः तेजपूर्ण पुरोडाश लेतेहि दोनों हाथ कटके गिर जानेसे, महा तपस्वी अष्टावक्र मुनिका उपदेशानुसार इस तीर्थमे स्नान करके सुवर्णकी हाथ प्राप्त हुये थे। हीनाङ्ग मनुष्यको इस तीर्थमे स्नान करना अवश्य कर्त्तव्य। इस माहात्म्यको जो पाठ अथवा श्रवनकरे सो इस तीर्थमे स्नान करनेका फल पाते है"।

॥ शिव तीर्थ ॥

[श्रीरामेश्वरजीकी देवालयके भितर पेस्कारकी आपिसके पिछाडीमे यह कुण्ड है। यहंपर सङ्कल्प करके स्नान करना चाहिये।]

श्रीसुतजी कहतें है कि "तदनन्तर शिवतीर्थ मे स्नान करना चाहिये। समस्त प्राणीके मङ्गलका हेतु स्वयं श्रीशिवजीने यह तीर्थ बनाया। इसमे स्नान करनेसे कूसंसर्ग-दोष, और ब्रह्महत्या आदि सर्वविध महापातकसे मुक्त होता है।

पूराकालमे ब्रह्माजी और बिष्णुजी परस्पर आपन आपन प्राधान्यके लिये कलह करनेका समय

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चारों बेद शरीर धारणकर, उभयके सम्मुख आय कहा कि "आप दोनोंमे कोइ बडा नहि; जगदुद्भव-पालन-नाशकर त्रिगुणधारी एक शङ्कर भिन्न और कोइ श्रेष्ठ नहि है"। बेदोंका बचन नमाना और दोनोंने अहङ्कारसे मत्त हो रहा, इसि समयमे श्रीशङ्करजीका आबिर्भाव होनेसे ब्रह्माजीने कहा कि "शिवतो पहिले मेरा ललाटसे उत्पन्न हुआ था, इसिलिये वहतो मेरा पुत्रके समान है"। ब्रह्माजीका ऐसा मदगर्ब बचन श्रबनकर क्रोधपूर्बक, आपने अंशसे उत्पन्न हुये कालभैरव रुद्रको भेजा, कालभैरवने महा कोपान्वित हो ब्रह्माजीके शिर काटकर गिरा दिया। तब श्रीशङ्करजीने आय ब्रह्माजीको पुनर्जीवित करनेसे, ब्रह्माजीने पुनर्जीबन पाय श्रीमहादेवजीका स्तुति करने लगा। उनका स्तुति मे प्रसन्न होकर शिवजीने ब्रह्माजीको क्षमा किया। और कालभैरवके कहा कि "तुम ब्रह्माजीके हत्या करनेसे तुमको ब्रह्महत्या-पाप लगा है। यह पाप मोचनके लिये, तुम इस ब्रह्माजीके कपाल हाथमे लेकर भिक्षा मांगते मांगते समस्त तीर्थ पर्य्यटन कर, अन्तमे गन्धमादन पर्बतके बीच मेरा बना हुआ तीर्थमे स्नान करके उस ब्रह्म-कपालको काशीमे कोइ स्थानपर रखनेसे, तुम यह पापसे मुक्ति पावोगे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीशङ्करजीका आदेशानुसार कालभैरव रुद्रने यह शिवतीर्थमे स्नानकर कपालको काशीमे स्थापन करके वह ब्रह्महत्या पापसे मुक्त हुआ। काशीजीमे जो स्थानपर वह कपाल रखाथा उसि स्थानको ब्रह्मकपाल तीर्थ कहतें है। इस तीर्थमे स्नान करनेसे सर्बबिध पापसे मुक्तहो कैलासको प्राप्त होता है। इस माहात्म्यको जो पाठ अथवा श्रबन करे सो इस तीर्थमे स्नान करनेका फल पाते है।

॥ शङ्ख तीर्थ ॥

[रामेश्वरजीकी देवालयके अन्दर दुसरो प्रदक्षिणका पूर्व बाजुके रास्ता की उत्तर कोना पर चारो और घेरा हुआ स्थानमे यह कुंए है। यहं पर सङ्कल्प कर स्नान करना चाहिये।]

श्रीसुतजी कहतें है कि "शिवतीर्थमे स्नान कर शङ्खतीर्थमे स्नान करना चाहिये।

पूराकालमे श्रीबिष्णुजीकी प्राप्तिको मानसकर शङ्खमुनिने यह स्थानपर तप किया था; इसिमे इस तीर्थका नाम शङ्खतीर्थ है। कोइसमय परम तपस्वी बत्सनाभ मुनि ऐसा कठोर तप किया कि उनका तप देख देवलोकभि चञ्चल होगये। तब इन्द्रजीने

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उनका तप भङ्गके लिये सातदिन मुषलधार वृष्टि करनेसेभि मुनिका ध्यान भङ्ग नहि हुये । परन्तु धर्मजीने दयापरवश बृहत महिषका रुप धारण करके मुनिके उपर खाडा होकर उनके रक्षा किया । सात रोजके बाद बृष्टि बन्ध होनेसे महिष वहांसे हटकर दुसरी स्थानमे खडा रहा । इतनिमे मुनिका समाधि खुलगइ और देखा कि आश्रम जलसे भरगया चारों और जलहि जल; ऐसा घोर बृष्टिमे कैसे मेइने रक्षा हुआ यह चिन्ता करते हुये सम्मुख एक बृहत महिषको देख धारणा किया की यह पशुने निश्चय मेरेको रक्षा किया है । परन्तु मुनिने कृतज्ञता नदेखाइ, पुनर्बार तपमे बैठनेसे ध्यानपर चित नलगा तब शोचाकी मेइ रक्षा-कारीका पूजाकर कृतज्ञता प्रकाश नहि किया इसिसे मेरा कृतघ्नता पाप होनेसे चित्तका विकार होता है; जीवनको त्याग नकरनेसे यह पापका प्रायश्चित्त नही होगा बिचारकर एक अत्युच्च पर्बत पर चढकर गिरनेको समय महिष रुप छोड धर्मजीने साक्षात् होकर कहा कि "हे बत्सनाभ! तु आत्महत्या मत कर, तेरा कठोर तप देख मेइ अति प्रसन्न हुआ अब तुम्हारा यह पाप मोचनकी उपाय कहता हुं । दक्षिण समुद्रके तीर गन्धमादन पर्बतपर शङ्खतीर्थमे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्नान करनेसे कृतघ्नता पाप नाश होगा" । धर्म-जीकी उपदेशानुसार मुनिने यह तीर्थमे स्नान कर पापसे मुक्त हुआ । इस तीर्थमे स्नान करनेसे सर्व प्रकार कृतघ्नता पापसे मुक्त होकर ब्रह्मलोकमे बास करके मुक्ति पाते है । इस माहात्म्यको जो पाठ अथवा श्रवन करे सो इस तीर्थमे स्नान करनेका फल पाय" ।

गङ्गा तीर्थ, यमुना तीर्थ,
॥ गया तीर्थ ॥

[शङ्ख तीर्थका पश्चिम भागमे यह तिन कूप है । तिनों कुंएका जल खुब मिठा है । यहंपर सङ्कल्पकर स्नान करना चाहिये ।]

श्रीसुतजी कहने लगे कि "तदनन्तर गङ्गा, यमुना, गया तीर्थमे स्नान करना उचित है । यह सर्वप्रकार पाप हरनेहारा तीर्थोंमे स्नान करनेसे अज्ञानका नाशहो चित्तकी शुद्ध होता ओर अन्तमे मोक्ष मिलता है ।

पूराकालमे जन्मसे पंगु रैक्क नामक एक मुनि गन्धमादन पर्वतमे तप करनेको समय तीर्थ स्नान

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

करनेका मानसकर पंगुके कारण दूर-तीर्थमे जानेको असमर्थ हेतु, योगबल द्वारा यह तिनों तीर्थके आबाहन करनेसे, पातालसे निकल तिनों तीर्थ मुनिका सम्मुख आय कहा कि "हे मुने! तुम्हारा तपसे सन्तोष होकर हम-तिनोंने यहंपर आया" । रैक्क मुनिने परम पुलकित हो तिनों तीर्थकों एकान्त भक्तिसे पूजाकर निबेदन कियाकि "आप तिनों कृपाकर यहं बास किजिये" । मुनिका पूजासे प्रसन्न होकर तिनों तीर्थने बास करनेका अङ्गीकार कर अन्तर्धान होगया ।

कोइसमय ब्रह्मज्ञानी परम तपस्वी रैक्क मुनिका प्रशंसा बाद शुनके उनसे उपदेश लेनेकी मानसकर जातश्रुति नामक एक परम धार्मिक राजा बहु धनादि लेकर मुनिके पास जाय भक्तिसे वह धन देनेसे, मुनिके वह धन थोडाहि समझ लेनेकी अस्वीकार कर कहा कि "हे राजन! हम धनका भुखा नहि हुं । आप मेरा पास ब्रह्मज्ञानका उपदेश लेनेको इच्छा किये, परन्तु बिना चित्त शुद्धिसे उपदेश लेना ठिक नहि है । अतएव आप मेरा आबाहन किया हुआ इस तिनों तीर्थमे स्नान करके चित्तकी शुद्धकर उपदेश लिजिये । मुनिका उपदेशानुसार यह तिनो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तीर्थोंमे स्नान करके मुनिसे ज्ञानोपदेश पाय जात-श्रुति राजाने ब्रह्मरुप प्राप्त होकर अन्तमे ब्रह्मलोक को प्राप्त हुआ। इस तीर्थोंमे स्नान करनेसे महापातक आदि और अज्ञानका नाशहो चित्तकी शुद्धि होता और अन्तमे मोक्ष पाते है । इस माहात्म्यको जो पाठ अथवा श्रबन करे सो यह तिनो तीर्थोंमे स्नान करनेका फल प्राप्त होय" ।

॥ कोटि तीर्थ ॥

[गङ्गा तीर्थका पश्चिम भागमे, रामेश्वरजीका मन्दिरके उत्तर तरह अन्नपूर्णा माताकी मन्दिरके पूर्व बाजुमे यह कूप है। इस तीर्थका जलसे समस्त देवताओंके स्नान पूजा होता है। इसिलिये मन्दिरका काम करने-वाला ब्राह्मणलोग भिन्न दुसरा किसिको यह कूपसे जल उठाने नहि देता। यात्रीलोगोंका स्नानके लिये, इस कूंएका उत्तर भागमे बाहाराकि तरह गोमुखी नल है, भितरसे ब्राह्मणलोग जल वह नलमेसे देता है। यहंपर सङ्कल्प करके स्नान करना चाहिये।]

श्रीसुतजी कहने लगे कि "तदनन्तर कोठि-तीर्थमे स्नान करना चाहिये। श्रीरामचन्द्रजी रावणको बध करके गन्धमादन पर्वतमे आय आपन नामसे शिवलिङ्ग स्थापनकर, उस लिङ्गका अभिषेकके लिये धनुष्की कोटि (अग्रभाग) द्वारा मृत्तिका भेदनकर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पातालसे गङ्गाकी धारा निकाले थे; इसिमे इसका नाम कोटितीर्थ हुआ । श्रीरामचन्द्रजी इस तीर्थमे स्नानकर, रावण हत्याका पापकी निवृत्ति किये थे ।

नित्यशुद्ध भगवान श्रीकृष्णजी आपन मातुल कंसको बध करनेसे, लोकमर्य्यादा रक्षाके लिये, नारदजीका बचनानुसार इस तीर्थमे स्नानकर श्रीरामनाथजीको दर्शन करके मातुलहत्या पापकी निवृत्ति किये थे । इस तीर्थमे स्नान करनेसे ब्रह्महत्या आदि सर्वविध महापातककी नाश हो अन्तमे मुक्ति पाते है । इस तीर्थमे स्नानकर रामेश्वरधाममे और नठहरना चाहिये । श्रीरामचन्द्रजी लक्ष्मणादि सह यह तीर्थमे स्नान और रामनाथजीके पूजन करके तत्क्षण अयोध्या जानेको लिये यात्रा किये थे । इसिलिये इस तीर्थमे स्नानकर, रामनाथजीकी दर्शन करके आपना स्थान मे जानेको लिये क्षणमात्र बिलम्ब नकरे । इस माहात्म्यको जो पाठ अथवा श्रबन करे सो यह तीर्थमे स्नानका फल पाते है" ।

॥ साध्यामृत तीर्थ ॥

[पार्वती माताकी नाटमन्दिरके सामने द्वारका दक्षिण बाजुमे यह कूप है । इस कुंएका जल खुब मिठा है । यहं पर सङ्कल्पकर स्नान करना उचित है ।]

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीसुतजी कहने लगे कि "अतःपर साध्यामृत तीर्थमे स्नान करना चाहिये । यह तीर्थमे स्नान करनेसे सर्वबिध पापका मोचन होता है ।

पुराकालमे उर्बशी नामक अप्सरा मित्राबरुणके शापसे नरलोकमे आय, परम रुपबान महापराक्रमी, धार्मिक, पुरुरवा नामक राजाका नगरमे घुमति थि; राजाने उसको देखकर मोहित हो बिवाह करनेका इच्छा प्रकाश करनेसे, उर्बशीभि राजी होकर, राजाके कइ नियम स्वीकार करायके राजाका साथ राजधानीमे जाय सुखसे रहने लगा । कुछ दिनके बाद राजाने प्रतीज्ञा भङ्ग करनेसे, उर्बशी सुरपुरीको चला गया । उर्बशीका अदर्शनसे राजा अति व्याकुलहो उनकी पुनःप्राप्तिके लिये नानाबिध उपाय चिन्ताकर, तप, यज्ञादि करके गन्धर्ब लोकको प्राप्त हुआ और उर्बशीको मिला । उर्बशीको प्राप्तहो राजा मनानन्दसे उनकी साथ बिहार करते रहे । एक दिन देवताओंके सभामे नृत्य गीत होनेका समय राजा पुरुरवा दर्शक मण्डलीमे बैठा था, इसिसमय उर्बशी अप्सरा नाचति थि, और नृत्य करनेका समय उर्बशीकी दृष्टि राजाका उपर पडनेसे दोनोंने मन्दहास्य किया, यह बेचाल देख नृत्य-गुरु तुम्बुरु अति कोपान्वितहो शापदिया

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कि "देवसभामे तुम दोनोंने हंसकर अश्लीलता किया इस लिये तुमदोनोंको अवश्य बिच्छेद होगा"। राजाने यह मर्म्मान्तिक शाप श्रबनकर अति कातर हो इन्द्रजीका चरणोंमे जा पडा; इन्द्रजीने दयापरबश अभय देकर उपदेश किया कि "गन्धमादन पर्वतपर साध्यामृत नामक एक तीर्थ है, उस तीर्थमे स्नान करनेसे शाप मुक्त हो, हमारे लोकमे आय उर्बशीसे मिलकर सुखसे बास करोगे"। यह इन्द्रजीके उपदेश पाय राजाने इसि तीर्थमे स्नानकर शाप मुक्तहो स्वर्गमे जाय उर्बशीके साथ परम सुखसे रहने लगे। यह तीर्थमे स्नान करनेसे सर्बाबिध पापका नाशहो स्वर्गको प्राप्त होता है। इस माहात्म्यको जो पाठ अथवा श्रबन करे सो इस तीर्थमे स्नान करनेका फल पाते है"।

॥ सर्ब तीर्थ (मानस तीर्थ) ॥

[रामनाथजीका बृहत् नाट मन्दिरके पूर्व-दक्षिण कोनापर यह कूप है। इस कुंएको जल खुब मिठा है। यहंपर सङ्कल्पकर स्नान करना अवश्य कर्त्तव्य।]

श्रीसुतजी कहते है कि "हे मुनिश्रेष्ठ! साध्यामृत तीर्थमे स्नान करके सर्वतीर्थमे स्नान करना चाहिये।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पुराकालमे सुचरित नामक एक जन्मान्ध-मुनि बहुकाल तप करते हुये शेष दशामे समस्त तीर्थमे स्नान करनेका अभिलाषकर दृढ भक्तिसे श्रीशङ्कर जीकी आराधना करने लगा। मुनिका तपसे शिव जी प्रसन्न होकर पार्वती सह बृषारोहन करके मुनिके सम्मुख आय कहा कि "हे सुचरित! तुम्हारा आराधनामे मेइ अति प्रसन्न हो सर्बतीर्थको आवाहन किया, तुम इस तीर्थमे स्नान करके अपना मनोभिलाषको पूर्ण करो"। मुनिने श्रीशङ्करजीका आदेशानुसार सर्बतीर्थमे स्नान करतेहि सुन्दर देइ प्राप्त हो शिवजीको दर्शन कर धन्य हुआ। श्रीशिवजीने कहा कि "हे सुचरित! तुम्हारा लिये समस्त तीर्थको एक स्थानमे आवाहन किया इसिलिये इस तीर्थका नाम सर्बतीर्थ हुआ, और हमने मानस करतेहि समस्त तीर्थ एकत्रित हुआ इसिसे इसको मानस तीर्थ भि कहेगा"। इस तीर्थमे स्नान करनेसे सर्बप्रकार पातक महापातकका नाश और मनोरथ सिद्ध हो अन्तमे शिवलोकमे गति होता है। इस माहात्म्यको जो पाठ अथवा श्रबन करे सो इस तीर्थमे स्नान करनेका फल पाते है"।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

॥ धनुष्कोटि तीर्थ ॥

[रामेश्वरसे १४ मील दक्षिण-पूर्व कोनामे यह तीर्थ है । रामेश्वर ष्टेशनसे जाय धनुष्कोटि ष्टेशनमे उतारके ३ मील जाने होता । वैल गाडी समय समय मिलता है । नौकामे जानेसे एकदम तीर्थपर पौंछता , परन्तु कार्तिकसे माघ महिने तक नौका नहि चलता, कारण यह ४ महिने यहंपर वर्षात् होता है । यहंपर ष्टेशनका नगिज दो धर्मशाला है । इसमे यात्रि लोग आरामके लिये रहने सक्ते । समुद्रसे आधा मील पश्चिम भागमे एक साधुका आश्रम है ; जंहापर राम, लक्ष्मण, सीता, हनुमान आदिका मूर्त्ति है; वह साधुने समस्त यात्रिको चुरा हुआ भुंजा चाना और समय समय पुरी प्रसाद देता है । इस स्थानमे पिनेके लिये मिठाजल मिलता है । सिलोन जानेवाला यात्रीलोगोंके लिये यहंसे प्रतिदिन एक स्टीमार जाता है और सिलोनसे एक स्टीमार प्रतिदिन यहंपर आता है । यहंपर सङ्कल्प करके स्नानकर श्राद्धादि करना अवश्यकर्त्तव्य । श्रावन-अमावस्या, महालया, शिवरात्रि-अमावस्या, अर्धोदय-योग, महोदय-योग, सूर्य्य, चन्द्र-ग्रहण और प्रति अमावस्यामे बहु लोक समागम होता है]

श्रीसुतजी कहने लगे कि "हे मुनिगणों ! सर्व तीर्थमे स्नान करके सर्वविध पाप हरनेहारा सर्व प्रधान तीर्थ धनुष्कोटिमे स्नान करना एकान्त कर्त्तव्य । श्रीरामचन्द्रजी रावणको बधकर सीता, लक्ष्मण, सुग्रीव, हनुमानादि सह गन्धमादन पर्वतमे प्रत्यावर्त्तन करने का समय बिभीषण भि सङ्गमे आनेसे श्रीरामचन्द्रजी विभीषणको लङ्कामे प्रत्यावर्त्तन कर सुखसे राज्य

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

करनेको लिये कहनेसे बिभीषणने कहाकि "हे कृपानिधे! आपका कृपासे मेरेको राज्य मिला, और मेइ आपका चरणार-बिन्द दर्शन करके धन्य हुं । परन्तु आपने लङ्कातक सेतु निर्मान किया है, इसिलिये मेरा राज्य करनेका बिघ्न होगा, कारण यह सेतुके मार्गसे जो कोइ पराक्रमी शत्रुओंने लङ्काको आक्रमण करेगा, अतएव हे अधमतारण ! यह अधमके लिये कोइ उपाय बिधान करना चाहिये । दयामय श्रीरामचन्द्र जीने बिभीषणका प्रार्थनासे प्रसन्न हो आपन धनुष्की कोटि (अग्रभाग) द्वारा लङ्काकी औरसे सेतुका कियदंश तोड दिये थे । इसिलिये इस तीर्थका नाम धनुष्कोटि हुआ । यह तीर्थका प्राधान्य शिवजीभि पञ्च मुहसे वर्णन करनेको असमर्थ होंगे । थोडाहि प्रभाव हमने वर्णन करता हुं ।

कुरुक्षेत्र युद्धके अन्त समयमे अश्वत्थामाने पाण्डवोंका पञ्च पुत्रकों शोतेहुये समय संहार किया था; इसिलिये उनको सुप्त-संहार पाप लगनेसे जहां जहां जाय वहिं स्थानका योगबलशाली मुनि, ऋषि, ब्राह्मणोंने अश्वत्थामाका पाप जानकर घृणा करनेसे, अत्यन्त दुःखित हों, पुण्यवान् तपस्वी श्रीबेदब्यासजीके पास जाय उनका चरणोंमे गिरे, और अपना

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पापका बृत्तान्त सब कहने लगे बेदव्यासजीने प्रथम घृणापूर्बक बहु तिरस्कारकर पश्चात् उनका करुण रोदनमे दयार्द्र होके कहा कि "हे द्रौणी! तुम्हारा यह पापका प्रायश्चित्त है नहि; तब एक उपाय है कि दक्षिण समुद्रमे सेतुरूप गन्धमादन पर्वतके समीप धनुष्कोटि तीर्थमे स्नान करनेसे तुम्हारा यह पापका मोचन होगा"। वेदव्यासजीका कृपा उपदेशानुसार अश्वत्थामाने इस तीर्थमे स्नानकर पापमुक्त हुआ था।

कोइसमय धर्मगुप्त नामक एक बिश्वासघाती राजा ध्यानकाष्ठ मुनिद्वारा शाप प्राप्तहो पागल होनेसे, नर्मदा-तीर वासी परमतपस्वी जैमिनी मुनिका आदेशानुसार यह तीर्थमे स्नान करके पागलपनासे छुट् गया था।

एकसमय पराबसु नामक एक वेदज्ञ ब्राह्मण, मृगचर्म ओढे हुये आपन पिताके मृग समझकर हत्या किया था। इसिलिये उनका ब्रह्महत्याका पाप लगनेसे अपना अनुज अर्बावसु द्वारा आराधित श्रीसूर्य्य देवकी उपदेशानुसार इस तीर्थमे स्नानकर पितृहत्या पापसे निष्कृति पाया।

और एकसमय ब्राह्मणको धन देनेकी स्वीकार कर न देनेसे जम्बुक-योनि प्राप्त देवशर्मा नामक,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

और परस्वापहरणका पापसे बानर-योनि प्राप्त बेद-नाथ नामक दोनो ब्राह्मणोंने परस्पर अपने अपने पूर्वजन्म बृत्तान्त बर्णन करनेको समय दैवयोग महर्षि सिन्दुद्वीप मुनि वहंपर आनेसे उन दोनोंने मुनिको प्रणामकर बहुत स्तुतिके साथ प्रार्थना किया कि "हे महर्षि! आप कृपाकर हम दोनोंको कोइ उपाय बताइये कि जिंसमे यह पाप-योनिसे मुक्त हो जांउ" सिन्धुद्वीप मुनिने उन दोनोंका कातर प्रार्थनासे प्रसन्न होकर कहा कि "दक्षिण समुद्रमे रामसेतुका समीप धनुष्कोटि तीर्थमे स्नान करनेसे तुम दोनोंका पापकी मोचन होगा। इस तीर्थका ऐसा प्रभाव है कि कोइ समय, मद्यपायी, बेश्यासक्त, परस्वापहरणकारी और ब्रह्महत्याकारी सुमति नामक एक ब्राह्मण, चतुर्बिध पापसे लिप्त होकर बहुकष्ट भोग करनेके बाद दुर्बासा मुनिके कृपासे धनुष्कोटि तीर्थमे स्नानकर मुक्त हुआ था। और एकदिन, दुर्विनीत नामक हिताहित ज्ञान शून्य, तरुण बयस्क एक युबक कामान्ध हो अपने गर्भधारिणीके बलपूर्वक रमणकर मातृहरण पापसे कातर हो अवशेष श्रीबेदव्यासजीका कृपा उपदेश पाय धनुष्कोटि तीर्थमे मकरका सूर्य्यके समय एक महिना नियमित स्नानकर, माता पुत्र उभयने पाप

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मुक्त हुये थे। तब सिन्धुद्वीप मुनिने जम्बुक और वानरको कहा कि "तुम दोनो भि धनुष्कोटि तीर्थमे जाय स्नान करो"। यह मुनिका कृपादेश पाय दोनो मित्रने धनुष्कोटि तीर्थमे स्नानकर पाप मुक्त हो, दिव्यदेह प्राप्त होकर स्वर्ग को चला गया।

पूराकालमे महापापीका सङ्गकर दुराचार नामक एक ब्राह्मणका ब्रह्मणत्व नष्ट होनेसे, संसर्ग-दोष पापसे बेताल होके घुमता फिरता रहा, दैवयोग, महालयश्राद्ध नकरनेसे, पितृलोक द्वारा शाप प्राप्त एक बेतालने, दुराचारको ताडना करनेसे, भयभीत हो भागते भागते आय धनुष्कोटि तीर्थमे कुद पडा; तीर्थका प्रभावसे जलस्पर्श होतेहि पाप मुक्त हो आपन स्वरुप प्राप्त होगया; ऐसा परिबर्त्तन होनेका कारण चिन्ता करते हुये, दुराचारने तीर्थका तीरमे परिभ्रमन करते थे, इसिसमय दत्तात्रेय मुनिका साथ साक्षात् हुआ। मुनिजीको देख दुराचारने आपना अवस्था परिबर्त्तनके लिये प्रश्न करनेसे, मुनिजीने धनुष्कोटि तीर्थका महिमा दुराचारको समस्त कहा; दुराचारने तीर्थका माहात्म्य अबगत हो अतिआनन्द के साथ मुनिजीको साष्टाङ्ग प्रणामकर धनुष्कोटि तीर्थका प्रशंसा करते हुये आपना स्थानको चला

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गया। और वह बेताल भि धनुष्कोटि तीर्थके दर्शन कर पाप मुक्त हो दिव्य देह प्राप्त होकर बैकुण्ठ को चला गया। इस तीर्थका ऐसा माहात्म्य है कि स्पर्श, दर्शन अथवा स्मरण करनेसे भि समस्त पातक नाश हो जाता है। ऐसा कोइ पाप नहि है कि जो धनुष्कोटिमे स्नान करनेसे मोचन नहि होता। आश्विन अपर-पक्षमे इस तीर्थमे स्नानकर महालया श्राद्ध करनेसे पितृलोक बहुकाल तृप्त रहतें है। माघ महिनेमे स्नान करनेसे सर्बबिध पापका क्षय होता। अर्द्धोदय, और महोदय योग, सूर्य्य और चन्द्रकी ग्रहण, श्राबन, आश्विन और शिवरात्रिके अमावस्या, यह समस्त दिनमे बिशेष करके स्नान करना अवश्य कर्त्तव्य। धनुष्कोटि तीर्थके तुल्य तीर्थ नहुआ और नहोगा। इसमे स्नान करनेसे निःसन्देह चतुर्बर्गका फल मिलता है। इस माहात्म्यकी जो पाठ अथवा श्रबन करे सो सर्बप्रकार पापसे मुक्त हो स्वर्गको प्राप्त होता"।

॥ क्षीर-सरोवर तीर्थ ॥

[देवीपुर (जंहापर चक्रतीर्थ है) उसके पश्चिम भाग सेतुमूलके समीप फुल्लग्राममे यह तीर्थ है।]

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीसुतजी कहतें है कि "हे शौनकादि मुनिगणों! रामसेतुपर जो चौविश तीर्थ प्रधान है, सो वर्णन किया; अब और जो जो तीर्थ है उसके वर्णन करता हुं।

देवीपुरके थोडाहि पश्चिम फुलग्राममे क्षीरकुण्ड नामक एक तीर्थ है। इसि स्थानसे सेतु सुरु हुआ इसिलिये इस स्थानको सेतुमूल भि कहता है।

पूराकालमे श्रीबिष्णुभगवानकि साक्षात् मानसकर मुद्गलनामक एकमुनि फुलग्रामपर बिधिपूर्वक यज्ञ करनेसे भगवान लक्ष्मीकान्त प्रसन्न होकर श्रीलक्ष्मीजीकी साथ, यज्ञभाग ग्रहण करनेको लिये मुनिका यज्ञस्थल पर उपस्थित हुये। भगवानको साक्षात् दर्शन पाय मुद्गल मुनिने परम पुलकित हो दृढ भक्तिसे स्तुति करने लगा। मुनिका स्तुतिमे प्रसन्न होके नारायण यज्ञका हवि ग्रहणकर तृप्त होके मुनिके वर मांगने कहा, मुनिने प्रार्थनाकी कि "हे भक्तवत्सल! आपका साक्षात् पाय और आप मेरा यज्ञका हवि ग्रहण करनेसे मेइ धन्य हुं। अब यह कृपा किजिये कि आपका चरणमे मेरा दृढ भक्ति रहे, और नित्य उभयकाल हवनकर आपको सन्तुष्ट रखने सकें। मुनिका यह प्रार्थनासे प्रसन्न होकर बिश्वकर्म्मा द्वारा वहिंपर एक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सुन्दर सरोवर बनवायकर, उभयकाल इसि सरोवरको दुग्धसे भरदेनेको लिये कामधेनुकी आज्ञादेकर मुनिसे कहा कि "हे मुद्गल! यह सरोवरका दुग्धसे प्रतिदिन दोनो काल हवन करते रहो। अन्तमे बैकुण्ठमे गति होगा; और इस तीर्थका नाम क्षीर-सरोवर होगा। इस तीर्थमे जो स्नान करेगा सो सर्वबिध पापसे छुट् जायगा"। इतना कहकर कमलापति कमलासह अन्तर्धान हो गये।

कोइसमय कश्यप मुनिके भार्य्या क्रूर-स्वभावा कद्रूने अपनि सपत्नि बिनताके प्रबञ्चना पूर्बक छलसे दासी बनायकर, अपने बिनताके पृष्ठोपर, और आपन वासुकी आदि सब पुत्रके, बिनता-पुत्र गरुडके पृष्ठोपर, चढ और चढायके नागलोकको गया। वहांपर सर्पोंने गरुडको दासीपुत्र कहनेसे, गरुड आपना माताको पुछकर समस्त बृत्तान्त अवगत हो सर्पोंसे कहा कि कौन उपायसे मेरा माता दासीपणसे मुक्त होगी। सर्पोंने कहा कि स्वर्गसे अमृत-कलस लाय हमलोगोंको देनेसे तेरि माता मुक्ति पावेगी। यह श्रबनकर गरुडने स्वर्गमे, जाय देवताओंसे युद्धकर अमृत-कलस लाते समय श्रीबिष्णुभगवान गरुडसे कहा कि "तेरा बिपुल बिक्रम देख मेइ बहुत सन्तुष्ट

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हुआ; तु मेरेसे वर मांग ले" गरुडने यहवर मांगा कि "मेइ अमर हो जाऊं और तुम्हारा उपरमे रहुं" भगवानने स्वीकार करनेसे गरुड भि विष्णुभगवान को वर मांगनेके लिये कहनेसे, विष्णुने कहा कि "हम तुमको मेरा बाहन करने चाहता हुं" । गरुड भि इस बातको स्वीकार कर लिया । पिछे इन्द्रजीभि सन्तुष्ट होकर गरुडको वर मांगनेको कहनेसे गरुडने यह प्रार्थनाकी कि सर्पोंने मेरा माताकी बहुत दुःख दिया इसिलिये यह वर दिजिये कि सर्प मेरा खाद्य होय । इन्द्रजीने अङ्गीकार कर लेनेसे गरुडने अमृत-कलस लेकर नागलोकको जाय सर्पोंके पास कुशोंके उपर रखकर आपने माताको दासीपणसे उद्धार करके जानेका समय कद्रूको शाप दिया कि छलसे मेरा माताको दासी बानाया इसिलिये तुभि अपना स्वामी सेवासे बंचित् होगी" । यह शाप देकर आपना स्थानको चला गया । अमृत-कलसको देखकर पुलकित हो सर्पोंने स्नान करनेको चला गया; इसि अवसरमे इन्द्रजीने अमृत-कलसकि उठायले स्वर्गको चले गये । सर्पोंने स्नान करके आय अमृत-कलस नहि देखकर पस्ताने लगा । कुछदिनके बाद कद्रूने अपना स्वामीका पास जानेसे, कश्यप मुनिने कद्रूके बहु

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तिरस्कारकर कहा कि "तु महापापीनी, मेरा सम्मुखसे चलाजा, तु मेरा सेवाका योग्या नही, तेरेको देखनेसे भि पाप होगा"। स्वामीका इस प्रकार क्रोधपूर्ण बचन शुनकर कद्रूके दुःखिता देखके, बिनताने स्वामीको बिनति किया कि "आप कृपाकर मेरा बहिनका अपराध क्षमा किजिये"। बिनताके शान्नि-पूर्ण बचनसे प्रसन्न होकर कश्यप मुनिने कहा कि "दक्षिण-समुद्रके तीर फुल्लग्रामके पास क्षीर-सरोवर नामक एक तार्थ है, उसिमे स्नान करनेसे पाप मुक्त होनेपर मेरा सेवा-योग्या होगा" । स्वामीका उपदेशानुसार कद्रूने आपन पुत्रगणों सह इस क्षीर-सरोवर तीर्थमे स्नानकर पाप मुक्त होनेसे कश्यपजीने कद्रूको ग्रहण किया। यह तीर्थमे स्नान करनेसे सर्बबिध पाप नाश होकर अश्वमेधादि यज्ञका फल मिलता है । इस माहात्म्यको जो पाठ अथवा श्रबन करे सो इस तीर्थमे स्नान करनेका फल पाते है"।

॥ कपि तीर्थ ॥

[पामन रेलवे ष्टेशनका नगिज यह तीर्थ है । बृहत् रमणीय कुण्ड, इसका जल बहुत मिठा है । यह कुण्डका तीरमे श्रीकालभैरवजीका एक मन्दिर है । मन्दिरका सामने समुद्रमे भैरवतीर्थ । प्रतिवर्ष इस तीर्थका पास मेला होता है ।]

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीसुतजी कहतें है कि "कपि नामक एकतीर्थ है, जिसमे हनुमानादि बानरोंने, रावण बधके अन्त में जब गन्धमादन पर्वतमे आये थे, तब उन्होने यह तीर्थ रचनाकर सबकोइ स्नान करके, तीर्थको वर दिया कि "जो इस तीर्थमे स्नान करेगा सो महा-पातकोंसे मुक्त हो स्वर्गको पावेगा" बानरोंका अनु-रोधसे श्रीरामचन्द्रजी भि इस तीर्थमे स्नानकर वर दिया कि "यह तीर्थमे स्नान करनेसे सर्वबिध पापसे मुक्त हो, गङ्गादि तीर्थमे स्नान, सर्वबिध दान, समस्त प्रकार यज्ञादि करण, सन्ध्या आदि नित्यकर्म्म समा-धन, और देवताओंका पूजादि यह समस्त प्रकारके धर्मकार्य्यका फल प्राप्त होकर बैकुण्ठको गति होगा" इस तीर्थका इतना महिमाके कारण समस्त देवता, गन्धर्व, किन्नर, योगी, मुनि आदिओंने स्नान किया था ।

पूराकालमे बिश्वामित्र राजा, बलपूर्बक काम-धेनु आत्मसात् करनेको लिये, बशिष्ठजीके साथ संग्राम करके बशिष्ठजीका ब्रह्मतेजका पास परास्त हो, ब्रह्मतेजका प्रभाव देख असूया-परवश, अपने भि ब्राह्मण होगा यह मानसकर कठोर तप करने लगा । देवताओंने उनकी ऐसि कठोर तप देख विचलित हो,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तप भङ्गके लिये रम्भा अप्सराको भेजनेसे, बिश्वामित्र राजाने योगबल द्वारा समस्त बृत्तान्त अवगत हो, रम्भाका कू-अभिप्रायके लिये शाप दिया कि "रे दुष्ट! तु मेरा तप नष्ट करनेको कारण इन्द्रके आज्ञासे आय, मेरेको प्रलोभित करनेका यत्न किया इसिलिये तु पाषाण हो बहुकाल रहकर पश्चात् श्वेतमुनिका कृपासे मुक्त होगी"। राजाका यह शाप शुनतेहि रम्भा पाषाण होगया। बिश्वामित्र राजाने बहुकाल कठोर तपकर, तपोबल और बशिष्ठजीके बचनसे ब्राह्मण हुआ था। अनन्तर दैवनिबन्धन मुक्ति-कामी श्वेत-मुनिने उसि आश्रममे तप करनेका समय, अगस्त्य-मुनि द्वारा शाप प्राप्त अङ्गारका नाम्नी राक्षसी, मुनिका तप नष्ट करनेको लिये नानारूप अत्याचार करनेसे, कोपान्वित हो श्वेत मुनिने वहि पाषाणको मन्त्रःपूतकर राक्षसीके उपर निक्षेप किया। पाषाणको आते देख राक्षसी भागके इस कपितीर्थमे प्रवेश किया और पाषाण भि पिछे पिछे आय उसिके उपर मे गिरनेसे राक्षसी चूर्ण हो गई। तीर्थका प्रभावसे तीर्थ-जल स्पर्श होतेहि दोनोंने मुक्त हो स्वर्गको चला गया। वह राक्षसी पूर्वजन्ममे घृताची अप्सरा थि। इस तीर्थमे स्नान करनेसे सर्वबिध पापसे मुक्त हो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्वर्गको गति होता है । यह माहात्म्य को जो पाठ अथवा श्रबन करे सो इस तीर्थमे स्नान करनेका फल पाते है" ।

॥ गायत्री और सरस्वती तीर्थ ॥

(तथा सावित्री तीर्थ ।)

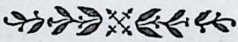

[रामेश्वरजीकी देवालयके हातेमे पूर्व फाटकका उत्तर भागपर यह तीर्थ है । सेतुखण्डमे सावित्रीतीर्थका माहात्म्य वर्णन है नहि परन्तु एकहि स्थानमे तिन तीर्थ बर्त्तमान है । यहंका ब्राह्मणोंने सावित्री गायत्री और सरस्वती यह तिन तीर्थ कहता है । यहंपर यात्रीलोगोंने सङ्कल्प करके स्नान करता है ।]

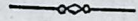

श्रीसुतजी कहतें है कि "पूराकालमे एकदिन ब्रह्माजी कामाभिभूत हो अपनि कन्या सरस्वतीके पास अपना कू-बासना प्रकाश करनेसे सरस्वतीने आपन पिताका कू-अभिप्राय अवगतहो लज्जिता और भीता होकर मृगीका रुपधार भागनेसे ब्रह्मा भि मृग-रुप धारणकर उनकी पिछे-पिछे दौडने लगा । श्रीशिवजीने ब्रह्माका यह कूव्यवहार देख क्रोधान्वित होकर व्याधका रुपधार हरिण रुपधारी ब्रह्माको बध करनेसे ब्रह्माजीके शरीरसे एक तेज निकलकर "मृग-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शिरा नक्षत्र" हो और शिवजी "आर्द्रानक्षत्र" हो उनका पिछे जाय आकाशमे स्थित होगया; जो अद्यापि मृगशिरा नक्षत्रका पिछे व्याध-रुप आर्द्रा नक्षत्रकी देख पडता है। शिवजीकी बाणसे ब्रह्माजी के पतन होनेसे गायत्री और सरस्वती अति शोकाकूला हो ब्रह्माजीको पुनर्जीवित करनेके लिये गन्धमादन पर्वतमे जाय अपने-अपने नामसे तीर्थ बनाय कर, दोनोंने संयमके साथ शुद्धाचारसे श्रीशङ्करजीका आराधना करने लगी। बहुदिन तप करनेसे श्रीशिवजीने तुष्ट होकर गायत्री और सरस्वतीके सम्मुख आविर्भुत हुये। और उन दोनोंकी कातर प्रार्थनासे दयार्द्र हो ब्रह्माजीके पुनर्जीवित करके कहा कि, "तुम दोनोका तपका प्रभावसे ब्रह्माजी जीवन पाया, इसिसे यह दोनों तीर्थ लोक मे प्रसिद्ध होगा। इस दोनों तीर्थमे जो स्नान करेगा, सो मोक्षको प्राप्त होगा"। इतना कहकर श्रीशिवजी अन्तर्धान होनेसे गायत्री और सरस्वती ब्रह्माजीके साथ ब्रह्मलोकको चला गया।

कस्यप नामक एक ब्राह्मण महापापग्रस्थ हो इन तीर्थोंमे स्नान करके मुक्त हुआ था; शमीक-ऋषिका पुत्र शृङ्गि द्वारा अभिशप्त राजा परीक्षित का तक्षककी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दंशनसे मृत्यु होगा शुनकर, सर्पविष-निवारक मन्त्रज्ञ वह कस्यपने, तक्षकका विषसे राजाका जीवन रक्षा करनेसे बहु अर्थ मिलेगा यह विचारकर, हस्तिनापुर जाता रहा। मार्गमे ब्राह्मण रुपी तक्षकके साथ साक्षात् होनेसे, तक्षकने पुछा कि "हे ब्राह्मण! तुम कंहा जाता है" कस्यपने आपन उद्देश्य बर्णन करणेसे, तक्षकने आपन परिचय देके उनका मन्त्रकी शक्ति परीक्षाकर कहा कि "हे ब्राह्मण! बिचार करके देखो कि राजाका काल-पूर्ण हुआ; मुनि कुमारका बचनभि मिथ्या होना नचाहिये, और तुमने जो अर्थ प्राप्तिके लिये जाता है, उससे बेशी अर्थ हम तुमको देताहुं तुमने लौट् जावो." इतना कहके तक्षकने ब्राह्मणको बहुत धन दिया। कस्यपने मनमें बिचारकर वह बातको मान लिया और तक्षकसे धन लेकर आपन आश्रम को लौट् गये। विष चिकीत्सा जानकर जो व्यवहार न करे सो महापापी होता है। कस्यपने समर्थ होकर अर्थके लालच्से राजा परीक्षित्का प्राणरक्षा नहि किया इसिमे राजाका पाप कस्यपको लगनेसे महा दुःखित् हुआ। अनन्तर शाकल्य मुनिका कृपा-देशसे इन दोनों तीर्थमे स्नान करके, गायत्री और सरस्वतीकी साक्षात् पाय कस्यपने पाप मुक्त हुआ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इस तीर्थमे स्नान करनेसे सर्वविध महापातक नाश हो मोक्षको प्राप्त होता है। यह माहात्म्यको जो पाठ अथवा श्रवन करे सो इन तीर्थोंमे स्नान करनेका फल पाते है"।

॥ ऋणमोचन तीर्थ ॥

(तथा और अन्यान्य तीर्थ।)

[ताङ्गाचिमठम ग्रामके पश्चिम भागमे एकान्त रामनाथकी देवालय का उत्तर वाजुमे यह तीर्थ है। चारों और पत्थरसे बंधा हुआ घाट् विशिष्ट वृहत् कुण्ड इसका जल वहुत् मिठा है। इस कुण्डका भि संस्कार होना चाहिये।]

श्रीसुतजी कहने लगें कि "इस गन्धमादन पर्वतमे ऋण-मोचन नामक एक तीर्थ है। इस तीर्थमे स्नान करनेसे, ऋषिऋण, देवऋण, और पितृऋण यह त्रिविध ऋण-पापसे मुक्त होता है। जो अधमर्ण उत्तमर्णका ऋण परिशोध करने नहि सक्ता, सो भि इस तीर्थमे स्नान करनेसे ऋण पापसे मुक्त होता, इस लिये इसका नाम ऋण-मोचन तीर्थ है।

ऋणमोचनका थोडाहि दूरमे, युधिष्ठिर आदि पंच पाण्डवों ने, भोग और मुक्तिके लिये यज्ञ किया

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

था, इसि कारण इस तीर्थका नाम पंच-पाण्डव तीर्थ। यह तीर्थमे स्नान करनेसे, सर्वबिध पापका मोचनहो ब्रह्मलोकको प्राप्ति होता है।

इसि गन्धमादन पर्वतमे दैत्योंके उच्छेद कामना कर इन्द्रादि समस्त देवताओंने एक तीर्थ बनायकर स्नान किया था, इसिको देव तीर्थ कहता है। यह तीर्थमे स्नान करनेसे आजन्म संचित् पाप नष्ट हो अश्वमेधयज्ञका फल और सर्वसिद्धि प्राप्त होता है।

राम सेतुमे सुग्रीवजीने जो तीर्थ बनाया था, उसका नाम सुग्रीव तीर्थ। (रामेश्वर बाजारसे गन्ध मादन पर्वतमे जानेका रास्तामे यह तीर्थ है। राम-झरोका को गन्धमादन पर्वत कहता है) इस तीर्थमे स्नान करनेसे, सर्वबिध पापसे मुक्त हो, अश्वमेध यज्ञका फल प्राप्ति सह सूर्य्य-लोकको गति होता है। रामसेतुमे बहु तीर्थ है, हम कंहातक वर्णनकरे। सब बानरोंने अपना अपना नामसे तीर्थ बनाय स्नान किया था; नलतीर्थ, नीलतीर्थ, गवयतीर्थ, गवाक्ष तीर्थ, अङ्गदतीर्थ आदि बहु तीर्थ है, जिसमे स्नान करनेसे महापातकका नाश होता है। बिभीषणके बनाया तीर्थमे स्नान करनेसे सर्वबिध पापसे मुक्त हो वैकुण्ठको प्राप्त होता है। यह समस्त तीर्थ माहात्म्यको

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जो पाठ अथवा श्रवन करे सो इस समस्त तीर्थोंमे स्नान करनेका फल पाते है" ।

॥ सेतुमाधव तीर्थ ॥

[रामनाथजीका मन्दिरके पश्चिम भागमे यह तीर्थ है । चारों और पत्थरसे बांधा हुआ बृहत् कुण्ड, इस कुण्डके दक्षिण, पश्चिम और पूर्व तरह दोहरी दालान और यह कुण्डका बीचमे बीजली रोशनीकि खाम्वा है । इसका उत्तर बाजुके एक महलमे सेतु-माधवजीका मन्दिर । इसि महलमे दशरथजीके एक मन्दिर है, और नल, नील, गवय, गवाक्ष, गन्धमादन आदि तीर्थ कूप है । इस तीर्थमे स्नान करके पिण्ड दानादि कर्त्तव्य ।]

श्रीसुतजी कहतें है कि "पूराकालमे परम बिष्णुभक्त पुण्यनिधि नामक एक राजा सपरिवार रामसेतुको जाय धनुष्कोटिमे स्नानकर रामनाथजीकी दर्शन पूजा करके, वहि स्थानपर श्रीबिष्णुजीकी प्रीति के लिये यज्ञ किया । एकसमय वह राजाका भक्तिकी परीक्षाके लिये लक्ष्मीने अष्टवर्षीया बालिकाके रुपधार धनुष्कोटितीर्थमे, जंहापर पुण्यनिधि राजा स्नानान्ते दानादि करते रहे, वहांपर जाय राजाके कहा कि "मेरा माता पिता कोइ नहि है, आप मेरेको आपना कन्या समझकर आश्रय दिजिये, जो कोइ मेरेको आक्रमण केरगा उसको दण्ड देकर मेरेको रक्षा करना" ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

राजाने कन्याकी कथा अङ्गीकार कर अपना अन्तः पुरको लेगया । अनन्तर एकदिन नारायण ब्राह्मणका रुपधार, वहि राजाकी उद्यानमे लक्ष्मीको देख उनकी पास जाय हाथ पकडनेसे, लक्ष्मीजीने पुकारने लगा। उनकी पुकार शुनके राजाने उद्यानपर आय समस्त बृत्तान्त अवगत हो, वह ब्राह्मणको पकडायके लौह-शृङ्खलसे बन्धनकर एक मण्डपमे आबद्धकरके कन्याको ले अन्तःपुरको गये । रात्रिमे राजाने स्वप्न देखा;—

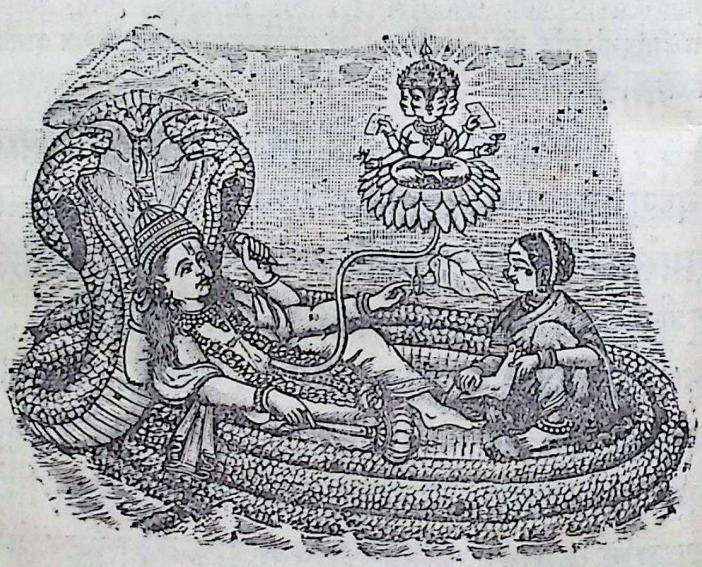

"शृङ्खलित पुरुष शङ्ख--चक्र--गदा--पद्मधारी चतुर्भुज ज्योतिर्मय नारायण-मूर्तिमे शेष-शय्यापर शायीत,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उन्कि नाभि-कमलसे ब्रह्मा समुद्भुत हो शून्यमे स्थित और कन्या भि कमलाके रुपमे बैठ उनका सेवा कर रहे है"। इसि अवसरमे राजाका निद्रा भङ्ग होनेसे, राजाने कन्याका घरमें जाय देखा और स्वप्नाको सच् मानलिया; तब कन्या-सन्धानमे अवरुद्ध, शृङ्खलाबद्ध ब्राह्मणका पास जाय, स्वप्नाकी बराबर देख रोमाञ्चित हो दृढभक्तिसे स्तुति करके प्रार्थनाकी कि "हे माया-धारी मधुसूदन ! मेइ अज्ञान बशतः आपको बन्धन किया, मेरा अपराध क्षमा किजिये"। राजाका प्रार्थनासे प्रसन्न होकर नारायणने कहा कि "हे राजन् ! तुमने कोइ अपराध नहि किया, तुम्हारा भक्तिकी परीक्षाके कारण मेइने लक्ष्मीको भेजा था; तुम भि बहुत भक्तिसे लक्ष्मीको रक्षा किया, इसि लिये मेइ अति प्रसन्न हुं, इसमे तुम्हारा कोइ दोप नहि है। मेइ आजसे यह शृङ्खलाबद्धावस्थामे सेतु-माधव रुपधार सेतुके रक्षाकी लिये यहंपर बिराज करुंगा। और तुमने जिस कुण्डके तीरपर मेरा प्रसन्नके लिये यज्ञ किये थे उस कुण्ड सेतुमाधव तीर्थ नामसे लोकमे बिख्यात होगा, और इस तीर्थमे स्नानकर मेरा सेतुमाधव-रुप दर्शन करनेसे सर्बबिध पापसे मुक्त हो कैलासको

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्राप्त होगा" । इतना कहकर लक्ष्मीजी सह लक्ष्मीपति अन्तर्धान हो गये । राजाने रामनाथकी वन्दनादि कर आपना राज्यको चला गया । इस तीर्थमे स्नान करनेसे सर्बबिध पापसे मुक्त होके लक्ष्मीजिकी कृपा-लाभ होता है, और अन्तमे कैलासको गति होता है। इस माहात्म्यको जो पाठ अथवा श्रबन करे सो इस तीर्थमे स्नान करनेका फल पाते है" ।

❀ सेतु-माधव । ❀

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

॥ श्रीरामनाथजीकि प्रतिष्ठा ॥

[श्रीरामनाथजीकि देवालय अति बृहदायतन कारुकार्य्य विशिष्ट समचतुष्कोन अट्टालिका। चारों और उच्च प्राकार वेष्टित चतुःसीमा प्रदक्षिणके रास्ताका दूरत्व-परिमाण, प्राय एक मील होगा। इस देवालयके अन्दर नाना खण्ड (महल) मे विभक्त है। देवालयके चारों दिशाओंमे एक एक सिंहद्वार है। अन्दरमे भि प्रति खण्डमे एक एक वडे वडे द्वार है। सिंहद्वारसे प्रवेश करके थोडाहि आगे, देवालयकि भितर चारों तरह प्रदक्षिण करनेका तिस्री रास्ता; इसका दोनों और दोहरी दालान है। भितरमे और एक द्वितीय प्रदक्षिणका रास्ता है। जिसमे रामनाथजीके और पार्वतीजीके दोनों मन्दिरके एकसाथ प्रदक्षिण किया जाता है; परन्तु अट्टालिकाकी संस्कार होता है, इसिलिये यह रास्ता अभि बन्ध है। यह रास्ताका पश्चिम वाजुमे एक वडा दरवाजा है, वह भि हमेशा वन्ध रहता है। देवालयकी अन्दर वाहार चारों और विजलीकि रोशनीका वन्दवस्थ है। रात्रिमे देवालयकी दृश्य अति रमणीय।

श्रीरामनाथजीकी मन्दिरके उत्तर वाजुमे हनुमान द्वारा स्थापित हनुमदीश्वरजीकी मन्दिर और दक्षिण वाजुमे, रामनाथजी, गङ्गाजी और पार्वतीजीकी धातु निर्मित प्रतिनिधि भोग-मूर्तीकी मन्दिर, यह मन्दिरकी पिछाडीमे देवगुरु बृहस्पतिकी एक छोटा मन्दिर और एक मण्डपमे नवग्रह देवताओंका मूर्ती है। हनुमदीश्वरजीकि मन्दिरके दक्षिण भागमे देवी भगवती, और उत्तर वाजुमे मन्दिरके देवाल संलग्न एक स्थानमे श्वेत-प्रस्तर निर्मित, महिषासूर नाशिनी दुर्गा देवी विराजिता है। यह तिनों मन्दिरके सामने वृहत् नाट-मन्दिर; नाट-मन्दिरके सामने रामनाथजी आदि वह तिनों मन्दिरके प्रदक्षिण करनेका प्रथम रास्ता और रास्ताका पूर्वभागमे वृहत् दरवाजा। यह

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दरजाके उभय पार्श्वमे पूर्व वारान्दापर चन्द्र और सूर्य्यदेव अवस्थित है। प्रदक्षिणके रास्ताका दक्षिण वारान्दामे, त्रेषट् भक्तकी माता, सुन्दरादी ४ भक्तोंको प्रस्तरमय मूर्ती और त्रेषट् भक्तोंकी धातुमय-मूर्ती एकतरह और प्रस्तरमय-मूर्ति एक तरहमे है। यहंकी आदमीने उसको "आरावत्तिमुवर" कहता है। इसके पास अष्ट शिवलिङ्ग। पश्चिम वारान्दामे क्रमसे सरस्वती, गणेशजी, महादेवजीका भिखारी-वेश (धातुमय-मूर्ती) लवणलिङ्ग, ज्योतीश्वर, जगदीश्वर, चन्द्रशेखर-महादेव और पार्वती (धातुमय-मूर्ती), कार्तिकजी और कमला। उत्तर बाजुका वारान्दामे क्रमसे एकादश-लिङ्ग, अहल्याबाई स्थापित शिवलिङ्ग, अन्नपूर्णाजी, कोटितीर्थ, ज्योतिर्म्मय लिङ्ग (श्वेत प्रस्तरका), सुन्दरादि चारो भक्तोंका धातुमय-मूर्ती, जटाशङ्करजीकी देवसभा, और जटाशङ्करजीका नृत्यसभा (नटनसभा)।

रामनाथजीकी सामने दुसरी एक खण्डमे नन्दिकेश्वरजी विराजित है। ऐसा बृहत् मूर्ती सचराचर दृष्टिगोचर नहि होता। नन्दिकेश्वरजीकी दक्षिण भागमे पेष्कारके आफिस; यहंपर रामनाथ और पार्वतीजीकी पूजाभिषेक आदिके लिये, नारिकेल तोडनेका, गङ्गाजल और दुग्ध चढानेका, सर्ब्बविध अभिषेक और समस्त प्रकारका अर्चना करानेका, नोटीशका मोताबिक, मोल देकर टिकट लेने होता है। नोटीश मे जो नियम है, उनका नकल यह पुस्तकका शेषभागमे है। वह पढनेसे देवस्थानका समस्त हाल मालुम होगा। नन्दिकेश्वरजीका उत्तर बाजुमे अभिषेकादिका सामान रखनेकी भाण्डार है। अभिषेक करानेवाला यात्रीलोगोंको यहंपर पञ्चामृत प्रसाद और चन्दन मिलता है। नन्दिकेश्वरजीकी पिछाडी पूर्वभागमे प्रवेश द्वारका आगे द्वितीय प्रदक्षिणका रास्ताका पासमे, यह दरवाजाका दक्षिण भागमे गणेशजी और उत्तर भागमे कार्तिकजी है। इस रास्ताका उत्तर भागमे यह देवस्थानका कोषागार, जिसमे सोने, चान्दि, हीरकादि द्वारा निर्मित बहुमूल्य जेवरादि भि रक्खा है। यहंपर पाहाराके लिये हमेशा पुलिसका शिपाहि रहता है। इस रास्ताका पूर्व भागमे वडे सिंहद्वारके आगे तिन्नी प्रदक्षिणका रास्ता, यह रास्ताका उत्तर सीमामे श्रीजटाशङ्करजीकी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

राजसभा; और पूर्व भागमे और एक द्वारके आगे एक मण्डप है। इस मण्डपका उत्तर-पूर्व कोनामे हनुमानजीकी मन्दिर है । इस मन्दिरके पूर्व बाजुमे बाहार तरहका रास्ता, यह रास्तेसे सिधा पूर्व भागका रास्तामे थोडा दूर जानेसे अग्नितीर्थ; और दक्षिण भागमे यह रास्ताका पूर्व बगलमे एक कोठामे एक बडा चान्दिका रथ है । इस रथके कोठाका पिछाडि भागमे रामनाथजीका हाथी रहता है; और पश्चिम दिशामे पार्वतीजीकी मन्दिरमे जानेका सिंहद्वार है । यह द्वारके आगे एक खण्ड है । उसको बिवाह मण्डप कहता है । श्रावन महिने मे यह स्यानमे हर-पार्वतीका विवाहोत्सव खुब समारोहसे होता है । इस मण्डपके पश्चिम भागमे दुसरी एक द्वारके पास तिस्री प्रदक्षिणाके रास्ता इसका पश्चिम बाजु एक द्वारके दक्षिण भागमे भोग भाण्डार । यहंपर देवस्थानका समस्त देवताओंका भोग तैयार होता है। यह भोग-प्रसाद मन्दिरका काम करनेवाला नोकर लोगोंनको नियम अनुयायी बांट देता है और परदेशी साधुलोगोंको भि दोप्रहरकी समय बितरण करता है । बाकी प्रसाद बिक्री होता। अभिषेक करानेवाला यात्रीलोगोंको अभिषेक होनेका बाद यहंपर प्रति अभिषेकके लिये तिन-तिन अन्नका-गोला, प्रसाद मिलता है। यह भाण्डारके पश्चिम बाजु एक द्वारके आगे एक खण्ड है, इसका उत्तर बाजुमे शिवतीर्थ और दक्षिण बाजुमे पुष्प, बिल्वपत्रकी-माला और चन्दनादि पुजाकी सामानका भाण्डार। इसका पश्चिम और एक द्वारके आगे एक खण्ड है, जिसका मध्यस्थलमे एक मण्डप है। प्रति शुक्रवार यह मण्डपमे पार्वतीजीकी प्रतिनिधि भोग-मूर्तीको स्थापनकर पूजा आरति आदि करके सुसज्जित सोवारीपर बैठाय, नृत्यगीतादी महा समारोहकर तिस्री प्रदक्षिणाके चारों और प्रदक्षिण करतें है। रात्रि ८। ९ बजे यह सोवारी निकलता है । वह मण्डपका उत्तर बाजुमे पद्मनाभजीका अनन्त-शायन मूर्ती है, और दक्षिण पश्चिम कोनामे साध्यामृत तीर्थ । इसका पश्चिम भागमे पार्वतीमाताकी मन्दिर। मन्दिरकी चारों और प्रदक्षिणका रास्ता। इस महलका उत्तर-पूर्व कोनामे कैलास-भवन; प्रतिदिन रात्रि १०। ११ घण्टेकि समय रामनाथजीकी मन्दिरसे रामनाथजीकी प्रतिनिधि भोग-मूर्तीकी सोवारि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

करके लाय कैलास-भवनमे भोग-पार्वतीकी पास स्थापनकर आरति होनेसे हर-पार्वतीका शयन होता । यहंपर समस्त दर्शकोंके चन्दन, क्षीर और चुरा हुआ चाना प्रसाद मिलता है । शुवह ४ । ५ घण्टेकी समय कैलास-भवनसे सोवारी करके फिन रामनाथजीकी भोग-मूर्तीको रामनाथ जीकी मन्दिरमे लाता है । और यह समय शङ्कराचार्य्य प्रतिष्ठित स्फटीक-लिङ्गका दुग्धसे स्नान और पूजा आरति होता है । यह समय भिन्न अन्य समय वह लिङ्गका दर्शन नहि होता ।

पार्वती माताकी मन्दिरसे निकल फिन तिस्री प्रदक्षिणका रास्तामे आय दक्षिण दिशामे थोडाहि दूरपर बांय तरफका कोनापर एक बडा कोठरीमे रामनाथजी, पार्वतीजी, गणेशजी, कार्तिकजी आदिके व्यवहार का स्वर्णनिर्मित वाहन और नाना प्रकारके यान है । यहंसे पश्चिम दिशामे जाय फिन उत्तर दिशामे थोडाहि दूरमे वांये दाथ पश्चिम सिंह-द्वारसे बस्ति और बाजार जानेका रास्ता । यह प्रदक्षिण रास्ताके उत्तर कोनामे एक कुठरि है, जिसमे रामनाथजीकी प्रतिष्ठाकी नकल प्रति-मूर्ती है । हिन्दु भिन्न अन्यान्य जो जातिका देवालयके अन्दरमे प्रवेश निषिद्ध, उन लोगोंके लिये यह प्रतिमुर्ती स्थापन किया है । पश्चिम सिंहद्वारके पूर्व भागका रास्ताकी उत्तर तरफमे सेतुमाधवका महल इस महलमे सेतुमाधवजीका मन्दिर, राजा दशरथके मन्दिर और नल, नील, गवय, गवाक्ष और गन्धमादन तीर्थ कूप है । और दक्षिण वाजुमे माधयतीर्थ । यह रास्ताका उभय पार्श्वमे वहुविध दुकानहै । रास्ताका दक्षिण वाजुमे प्रसिद्ध शङ्ख-व्यवसायी बाबु हेमचन्द्रकर महाशयका प्रधान एजेण्ट "शङ्खनिधि एण्ड कम्पेनी" का शङ्खका दुकान, जिसमे नानाविध शंख, शंखका जेवर आदि अनेक प्रकार द्रव्य मिलता है । इसका पश्चिम भाग रास्ताका उभय पार्श्वमे, कौडी आदि वहुप्रकारकि सामुद्रिक द्रव्य और रुद्राक्ष आदि मालाकी दुकान; रामनाथ, पार्वती, हनुमान आदिका फोटो तसवीरकी दुकान और कइ ताडका पत्तेकी अनेक प्रकार पेटीकि दुकान है ।

पश्चिम सिंहद्वारसे पश्चिम दिशामे वाजार जानेकी रास्ताका उभय पार्श्वमे पण्डालोगोंका और अन्यान्य भद्रलोगोंका वास भवन है, थोडा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आगे वाजार जहांपर शाक-भाजि तरकारी अनाज मिलता है । कइ मुदि-खाना दुकान है। "शंखनिधि एण्ड कम्पेनी" का दुकानमे चावल, आटा, मयदा, घृत आदि समस्त रकम आवश्यकीय द्रव्यादी हकदरमे हमेशा मिलता है। दो तिन मिठाइकी दुकान भि है। यहंपर पण्डालोग बहुत् है, उसमे;— श्रीयुत गङ्गाराम पीताम्बर, विद्यनाथ वैद्य-नाथ, पक्षी पर्वतराओ, सालिग्राम रघुनाथ, जगन्नाथ रामाया, रामनाथ विश्वनाथ, और आनन्दराम बाल-राम प्रभृति पण्डाजीओंने अति भद्रताके साथ यात्री ओंका तीर्थ कार्य्यादि सुचारु रुपसे सम्पन्न करातें है। इनलोगोंका बहुत् गुमास्ता है, जीसलोगोंने ष्टेशनसे यात्रीलोगोंको आपना पण्डाका घरमे लाता है । यहंपर यात्रीलोगोंके रहनेकि लिये यह पण्डा लोगोंका बहुत् स्थान है । तद्भिन्न धर्मशालाभि अनेक है; तन्मध्यमे मानिकलाल धर्मशाला, बंशीलाल अविरचन्द रायबाहादुर धर्मशाला, बागला धर्मशाला, ठक्कर जेठा भुलचन्द मेघजी धर्मशाला और देवालयका उत्तर दरवाजेकी पूर्वभागमे मथुरा दास मावजी मेघजी भाटीया धर्मशालामे यात्रि लोगोंका रहनेको सुभिता है । बाजारका पश्चिम दिशामे डाकघर इसमे तार अफिस भि है । पोष्टअफिस का थोडा पश्चिमभागमे पूलिस थाना और सबरेजष्टरी आफिस है । यहंका मिउनिसिपालिटीका वन्दवस्थ अतिसुन्दर है। रास्ता आदि हरबखत साफ रहता है। ष्टेशनका नगिज एक असपताल है, जिसमे असिस्टान्ट सर्जन रहता है। और एक महावीर नामक धर्मशाला है, जिसमे अफिसर लोक समय-समय उतरता है।]

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

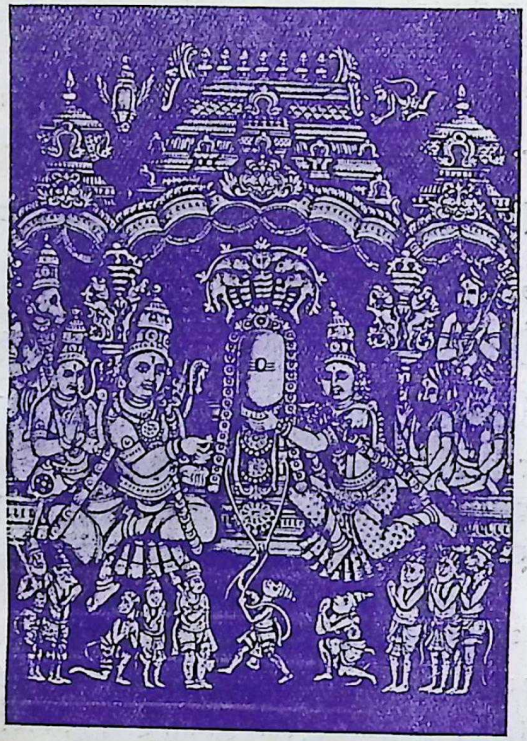

॥ श्रीरामनाथ लिङ्ग-प्रतिष्ठा ॥

श्रीसुतजी कहतें है कि "हे मुनिगणों! श्रीरामचन्द्रजी, रावणको बधकर लक्ष्मण, सीता, हनुमान, सुग्रीव, बिभीषण आदि सह गन्धमादन पर्वतपर स्थित होनेकासमय, अगस्त्यादि मुनिओंके कहा कि पूलस्त्य मुनिका पुत्र विश्रवा मुनिका औरससे निकसाका गर्भमे रावण उत्पन्न हुआ, ब्रह्मवीर्य्यसे जन्म होनेका कारण, रावण

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

को बध करके मेरेको ब्रह्महत्याका पाप लगा, इसका कोइ प्रायःश्चित्त बताइये कि जिसमे मेरा शुद्धि होय"। श्रीरामचन्द्रजीकी बचन शुनकर मुनिओंने कहा कि "हे दुष्ट-दमन शिष्ट-पालन! आप नित्यशुद्ध जगत् के कर्त्ता है, आपका पाप हो नहि सक्ता; तब लोक-मर्य्यादा रक्षाके, और आपने मनको प्रबोध देनेके लिये आप अपना नामसे एक शिवलिङ्ग स्थापन किजिये"। मुनिओंका बचनानुसार श्रीरामचंद्रजीने कैलाससे असली शिव-लिङ्ग लानेको लिये हनुमानको आज्ञा देनेसे, हनुमान कैलासको जाय असली लिङ्ग-रुप शिव न मिलनेका कारण, भक्तिसे शिवजीकी आराधना करके उत्तम लिङ्ग पाया।

हनुमानका शिवलिङ्ग लानेकी देरी और प्रतिष्ठाकि शुभमुहूर्त्त आगतप्राय देख मुनिओंने श्रीरामचन्द्रजीके कहा कि, "सीताजीने क्रीडा करके बालुकी जो शिवलिङ्ग बनाया, उसिको स्थापन कर दिजिये;" रामचन्द्रजी भि मुनिओंका बातमे सम्मत हो, ज्यैष्ठ मास, शुक्लपक्ष, दशमीतिथि, बुधवार, हस्तानक्षत्र, व्यति-पात् योग, गरकरण, कन्याके चन्द्र और बृषके सुर्य्य यह शुभमुहूर्त्तमे सीतासह रामनाथ-लिङ्गकी स्थापनकर दृढ भक्तिमे पूजा करनेसे;—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

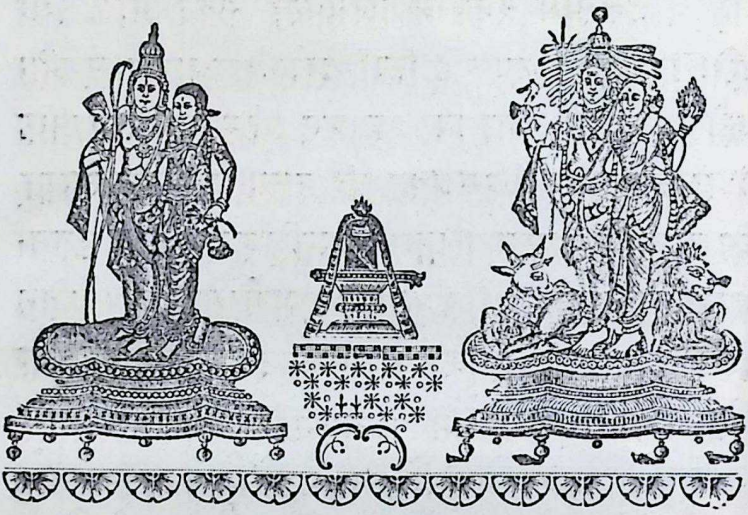

श्रीशिवजी पार्वती सह साक्षात् होकर कहाकि "हे दशरथात्मज! आपने नामसे यह लिङ्ग स्थापन करनेसे मेइ अति प्रसन्न हुआ। जो यह लिङ्गको दर्शन करेगा सो महापातकसे मोचन होकर अन्तमे कैलास को प्राप्त होगा"। इतना कहकर शिवजी पार्वतीसह अन्तर्धान हुआ। रामचन्द्रजीने धनुष्की कोटि (अग्र-भाग) द्वारा पातालसे गङ्गालाय, (जीसको कोटितीर्थ कहता है,) उसका जलसे रामेश्वरजीका पूजा किया, और रामनाथजीकी सामनेमे नन्दीकेश्वरको स्थापन किया। जंहा रामचन्द्रजीकी ब्रह्महत्याका मोचन हुआ उसको ब्रह्महत्याबिमोचन तीर्थ कहता है। इसका पास मे नाग-तीर्थपर वह हत्याकी प्रवेश करा दिया था।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इतनीमे हनुमान शिवलिङ्ग लेकर आये और दुसरी लिङ्ग स्थापन होगया देखकर, अभिमान और क्रोधसे कहने लगा कि "हे प्रभु ! हम कैलासमे जाय शिवजीको तपसे प्रसन्नकर यह उत्तम शिवलिङ्ग लाया, और अपने दुसरी लिङ्ग स्थापन किये; मेरा इतना श्रम बिफल होगया। मेरा यह शरीरसे कुछ प्रयोजन नहि"। इतना कहकर श्रीरामचन्द्रकी चरणोंपर गिर पडे। श्रीरामचन्द्रजीने हनुमानको बहुत् समझाया, परंतु हनुमानने न माननेसे रामचंद्रजीने कहा कि "मेरा स्थापन किया लिङ्गको यदि तुम उखाडने सको तो तुम्हारा लायाहुआ लिङ्गको स्थापन करें; किन्तु तुम इसको हिलाने भि नहि सकोगे, कारण इस लिङ्गका मूल सप्तपाताल भेदनकर नीचेको चला गया। तुम भि बहु ब्रह्म-राक्षसादि संहार किया, इसिलिये इस लिङ्गको तुम्हारा अपना नामसे स्थापन करो। मेरा स्थापन किया लिङ्ग और तुम्हारा स्थापन किया लिङ्गमे कोइ पार्थक्य नहि है। तुम्हारा स्थापित हनुमदीश्वरलिङ्गका आगे पूजा होनेसे तब रामनाथ-लिङ्गका पूजा होगा अतएव हे हनुमान! तु अभिमानको त्याग करके आपन नामसे वह लिङ्गको स्थापनकर"। परन्तु हनुमानने राघवजीकी बात न माना, और शोचाकि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यह तो बालुका-लिङ्ग है; इसको उखाडना कौन बडा कठिन काम है। इतना बिचारकर "रामनाथ-लिङ्गको" हिलाने लगा; किन्तु लिङ्ग कुछभि हिला नहि। तब हनुमानने क्रोधकर अपने पुंछसे लिङ्गको लपटायके दोनों हाथ जमीनमे रखकर प्रवल प्रतापसे ऐसा खिंचने लगा कि बसुमती कम्पान्विता होगया किन्तु लिङ्गको कुछभि उठाने नहि सका, अधिकन्तु लिङ्गसे पुंछ छुट् जानेसे एककोश दुरमे जाय ऐसा गिरा कि बदनसे बहुत खुन निकलने लगा, और मुर्च्छित हो गया। यह देखकर रामचन्द्रजीने अत्यन्त कातर हो सीता, लक्ष्मण, और अन्यान्य बानर सह जहां गिरा था, वहांपर जाय हनुमानको आपना गोदीमे लेकर बहुत बिलाप करने लगा। सीताजीने उनका देहमे हाथ फिराते रहा। कुछ समयके बाद हनुमानका चैतन्य होनेसे देखा कि स्वयं भगवान रामचन्द्रजी अपना गोदीमे ले बैठा है। तब हनुमानने अति अप्रस्तुत् होकर उठा और रामचन्द्रजी और सीताजीके प्रणामकर स्तुति करने लगा। उनका स्तुतिमे प्रसन्न होकर रामचन्द्रजीने कहा कि हे पवनपुत्र! अभिमान मत् कर तेरा स्थापन और मेरा स्थापन इसमे प्रभेद करना नचाहिये। यह जगत मे जीव अज्ञान होकर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कष्ट पाता है । अज्ञानका नाश न होनेसे ज्ञान नहि होता, और ज्ञान न होनेसे ब्रह्मज्ञानको मिलता नहि। अज्ञान बशत तुमने शिवजीको अवज्ञा किया, इसिसे इतना दुर्गति हुआ । अतएव हे वत्स! तु दुःख मत् कर शुभमुहुर्त्तके समय होनेसे भि तु लिङ्ग लेकर नाहि आया, इसिलिये सीताकी निर्मित बालुका-लिङ्ग स्थापन कर दिया । मेरा स्थापन किया लिङ्ग को, तेरा लाया हुआ लिङ्ग समझके चित्तको शान्त कर । अबसे इस कुण्ड तेरा नामसे लोकमे बिख्यात होगा । इस तीर्थमे जो स्नान करेगा और श्राद्धादि पिण्डदान करेगा उसका महापातकको नाश होगा; और उनका पितृलोक परम परितृप्त रहेगा । श्रीराम-चन्द्रजीसे ज्ञान प्राप्त होकर हनुमानने अपना लाया हुआ लिङ्गको, रामनाथजीका उत्तर भागमे अतिशय आनन्दके साथ स्थापन किया । आगे यह हनुमदी-श्वर-लिङ्गको दर्शनकर रामनाथ-लिङ्गका दर्शन कर-नेसे कोटिजन्मका पापक्षय होता है ।

रामनाथजीको एकदफे दर्शन, पूजन, प्रणाम, प्रदक्षिण करनेसे महापातकका नाश हो मुक्त होता है। रामनाथजीकी दर्शन किये हुये आदमीको दर्शन करनेसे रामनाथजीको दर्शनका फल मिलता है ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जो मनुष्य दूरदेशमे रहकर रामनाथजीको स्मरण मात्र करे वहभि समस्त पापसे मुक्त होता है। रामेश्वरको यात्राके लिये यदि कोइ मनुष्य किसिको मन्त्रणा देवें अथवा अर्थ साहाय्य करें वहभि निष्पाप होकर मुक्त होता है। रामेश्वरधाममे रहनेवाला मनुष्य अन्तकालमे शिव-स्वरुप हो कैलासमे वास करता। रामनाथजीको नारिकेलकाजल, गङ्गाजल, दुग्ध, घृत, मधु और पञ्चगव्यसे स्नान अभिषेक करानेसे सर्वविध पातक, महापातकका नाश हो अन्तमे कैलासको गति होता। रामेश्वरजीकी माहात्म्य कंहातक कहें, कोटीवर्षमे भि समस्त वर्णन हो नहि सक्ता।

पूराकालमे शङ्कर नामक एक राजा, मृगया खेलनेको लिये बनमे जाय, एक गुफामे व्याघ्र-चर्म्म ओढे हुये एक मुनिको व्याघ्र समझकर ऐसा बाण मारा कि जिसमे, पासमे बैठि हुइ उनका पत्नि समेत विद्ध होके मरगया। उनका एक पुत्र था; पितामाता उभयका एकसाथ अकस्मात् मृत्यु देखकर बालक बहुत् बिलाप करने लगा। उनका रोदनध्वनि शुनकर राजा और वहिंके सब मुनिओंने आय बृत्तान्त अवगत होकर बालकको सान्त्वना करके कहा कि "हे बालक! आपन-आपन कर्म्म-फलके अनुसार उन्होने

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्राणत्याग किया, बिलाप करनेसे और नहि जीयेगा, जो होनेका सो हो गया, "गतस्य शोचना नास्ति"। अब तुम पुत्रोचित् कार्य्यकरो । मातापिताका सत्कार करके उनलोगोंका अस्थि लेजाय राम-सेतुके समीप समुद्रमे डालकर वहिं प्रेतक्रीया करनेसे अपघात् मृत्यु दोषसे मुक्त होगा"। और राजाको मुनिओंने कहा कि "हे राजन्! आप जो कर्म्म किया है इस लिये अग्निमे प्रवेशकर आत्माहुति देनेसे तब यह पापका निवृत्ति होगा" । मुनिपुत्रने मुनिओंका आदेशानुसार रामसेतुके समीप समुद्रमे अस्थि डालकर पितामाताका प्रेतकार्य्य समाधा करनेके बाद एकदिन रात्रिसमय स्वप्नामे देखा कि "अपने पितामाता गरुडके उपर शङ्ख-चक्र-गदा-पद्म धार लक्ष्मीनारायण के तुल्य बैठा है"। यह स्वप्नामे देख अति आनन्दसे रामेश्वरजीको दर्शन, पूजन, प्रणामादि कर आपना स्थानमे जाय मुनिओंके समस्त बृत्तान्त कहा।

राजाने मुनिओंके वचनसे अग्नि-कुण्ड बनाय स्नानादि करके अग्निमे प्रवेश करनेको समय शून्यबाणी हुआ कि, "हे राजन्! तु अग्निमे प्रवेश मत्कर; दक्षिण समुद्रमे गन्धमादन पर्वतपर श्रीरामचन्द्र द्वारा स्थापित रामनाथ-लिंगका एकवर्ष त्रिसन्ध्या दर्शन,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पूजन, प्रणाम और प्रदक्षिण करनेसे ब्रह्महत्या और स्त्रीहत्या पापसे मुक्त होगा" । यह आकाश-बाणी शुनकर राजाने एकवर्ष पर्यन्त दृढभक्तिसे रामेश्वर-जीका सेवन करनेसे ब्रह्महत्या और स्त्रीहत्या पापसे मुक्त हुआ ।"

श्रीसुतजी कहा कि "हे मुनिगणों! रामेश्वर-जीका माहात्म्य कंहातक कहें; धनुष्कोटिमे स्नान करके रामेश्वरजीकी दर्शन करनेसे, महापापी भि मुक्त होकर कैलासको प्राप्त होता । इस माहात्म्यको जो पाठ अथवा श्रवन करे सो रामेश्वरजीकी दर्शन के फल पाय । रामेश्वर-सेतु-माहात्म्य पुस्तक जो स्थानमे रहे वहांपर पिशाच, अग्नि, चोर, रोगादिके भय नहि रहता; ओर समस्त देवताओंका वहिंपर अधिष्ठान होता है"। श्रीसुतजीने कहा कि "हे मुनि-गणों! हम संक्षेपमे सेतु-माहात्म्य बर्णन किया आप-लोगोंने इस माहात्म्यको प्रतिदिन यत्न-पूर्वक पाठ किजियेगा" । इसि समयमे श्रीबेदव्यासजी वहांपर आनेसे श्रीसुतजी और सब मुनिओंने उठकर अति-आदरसे सम्भाषण करके आसनपर बैठाया । व्यास-जी मनानन्दसे उपवेशन कर सब मुनिओंके कहा कि "हे शौनक आदि मुनिगणों! मेरा प्रिय शिष्य

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सुतजी प्रमुखात् आपलोगोंने सेतुमाहात्म्य श्रवन किया है, इसमे मेइ अति प्रसन्न हुआ। यह माहात्म्य को प्रतिदिन आलोचना करना चाहिये" । थोडाहि समयके बाद श्रीव्यासजीने सुतजीके साथ लेकर कैलासको गये । नैमिषारण्य वासी समस्त मुनिओंने उसि दिनसे नित्य तप जपादि नित्य-नैमित्तिक कर्म के साथ सेतु-माहात्म्यको पाठ करते हुये निवास करने लगे ।

श्रीरामेश्वर क्षेत्रका माहात्म्य समाप्त ।

॥ अयोध्यामे श्रीरामचन्द्रजीका राज्याभिषेक ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

॥ हनुमानजी कि कैलास गमन ॥

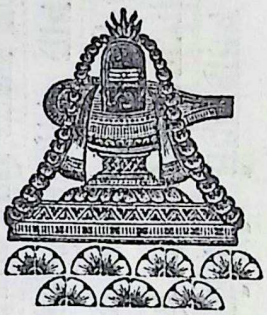

श्रीरामचन्द्रजीने कैलाससे असली शिव-लिङ्ग लानेके लिये आज्ञा देनेसे हनुमान कैलासको जाय असली लिङ्ग-रुप-शिव न मिलनेका कारण, भक्तिसे शिवजीकी आराधना करके उत्तम लिङ्ग पाया (७३ पृष्ठा)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अ न्या न्य

॥ दर्शनीय स्थानका विवरण ॥

रामेश्वरसे एक मील उत्तर दिशाओंमे रामझरोका नामक एक स्थान है। वहांपर एक उंचास्थानमे मन्दिरके अन्दर श्रीरामचन्द्रजीकि युगल चरण है। जिसका प्रतिदिन पूजा आरती होता। यात्रीलोगों ने वहांपर दर्शन करनेको जाते है। इस मण्डपका उपर चढनेसे चारों और समुद्रको देख पडता। इसिको यहंका आदमीने गन्धमादन पर्वत कहता है। यह स्थानका उत्तर भाग मयदानमे युधिष्टिर आदि पञ्च भ्राताओंने, अलग अलग एक-एक तीर्थ बनाया था; धर्मकुण्ड, भीमकुण्ड, अर्जुनकुण्ड, नकुलकुण्ड, सहदेवकुण्ड और द्रौपदीकुण्ड नामसे बर्तमान है। यह गन्धमादन पर्वतसे रामेश्वर धामका बाजार तक एक प्रशस्त रास्ता निकली है; जीसको गन्धमादन रोड कहता है। बाजारके निकट इस रास्तेके पश्चिम बाजु मे बैष्णव धर्मावलम्बी यात्रीलोगोंका सुभिताके लिये श्रीगौरीशङ्कर श्रीमाली नामक एक सत्यनिष्ठ ब्राह्मणने श्रीसत्यनारायणजीकि एक मन्दिर बनाय रहें है; और उनलोगोंको रहनेके लिये एक धर्मशाला बनानेका भि तजवीजमे है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हनुमानकुण्डके तीरपर एक मन्दिरमे शिवलिङ्ग है। और इस कुण्डका उत्तर बाजुमे भद्रकाली देवीका मन्दिर है।

रामेश्वरधामसे तिन मील दक्षिण दिशाओंमे और एक देवीका मन्दिर है; जिसको दक्षिणाकाली कहता है। यह मन्दिरका पश्चिम बाजुमे नलका जलकी कल है। वहांसे रामेश्वर बस्तिमे मिठाजल की सरवराह होता है।

जटातीर्थ और धनुष्कोटि तीर्थका बीचमे एक मन्दिर पर रामचन्द्र, लक्ष्मण, सीता और हनुमानजी की मुर्ती है। स्थानीय लोगोंने इनको कोदण्ड रामस्वामी कहतें है।

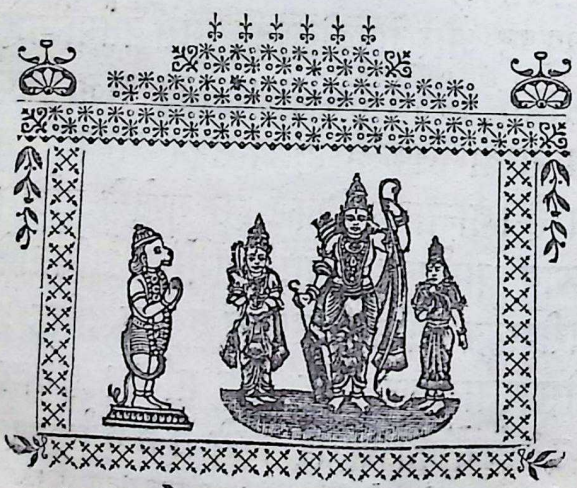

॥ कोदण्ड रामस्वामी ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रामेश्वर देवस्थानका नियमकि नोटीशका नकल।

१९१२ साल ६५ नं C. R. P. से मद्रास हैकोर्ट न्यायालयकि आज्ञासे श्रीरामेश्वर देवस्थानकी विचारणाके लिये एक व्यवस्था नियमित की गइ है। उस व्यवस्थानुसार एक विचारणा कमिटि नियत की गइ है। उस सभामे ये सभासद चुने गये है।

(१) रामनाथपुर संस्थानका राजा हानरावेल श्रीराजराजेश्वरसेतुपतिजी उर्फ मुदरामलिङ्ग सेतुपतिजी।

(२) देवकोट जमीन्दार अरुणाचलम चेटियर।

(३) दोडुपनाथकनुर जमीन्दार देवान वहादुर रामभद्र नायडुजी।

(४) मदुरा हैकोर्ट वकील हानरावेल श्रीरामअय्यङ्गारजी।

(५) मदुरा हैकोर्ट वकील श्रीरङ्गस्वामी अय्यरजी।

देवस्थानके मन्दिरकी और गांव वगेराकी विचारणाके लिये, ४००, रुपैया मासिक बेतनमे एक दृष्टिको और १०० रुपयासे १५०, रुपया तक मासिक बेतनमे एक कोषाध्यक्षको (खजांजि) उक्त कमिटीने नियमित किया है। ये कोषाध्यक्ष रामेश्वर नगरमे प्रधान आफिसार (कामवाला) है। मन्दिरमे महादेवजीके और जगदम्बाजीके पूजा आदि सब आन्तरीय व्यवहार ये देखते है। उपरोक्त नियमानुसार दृष्टिजीके अधिकारमे देवस्थानका सब माल है।

(२) देवस्थानका नियममे और जमा (आय) मे सरकारका सम्बन्ध कुछभि नहि। छः पुलिसवालो मालखाने कि जिसमे देवस्थानके सब माल रखे जाते है, रक्षा करते है। उनका वेतन देवस्थानसे महिने महिने पर दिया जाता है।

(३) देवस्थानका बिचारणमे और पूजा आदिमे क्षेत्रबासी पण्डालीगोंका कुछभि सम्बन्ध नहि। अधिकारीजी महाराष्ट्र ब्राह्मणोंमेसे पूजारीको चुनकर उनके जीवनके लिये ठोक बेतन देकर उनसे पूजा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कराता है । यदि यात्रीलोग इस विषयमे और कुछबात पुछना चाहेतो कृपाकरके कोषाध्यक्षजीसे भेट करनि चाहिये ।

(४) भगवान महादेवजीके लिये और जगदम्बा माताजीके लिये जोकुछ सोना चांदिका टुकडे विल्वपत्र, त्रिशुल, छत्रि आदि देनेवाले यात्रीलोंग, पहिले इन सामानकि पेस्कारको देखा लावेगी, बाद उसमे टिकट (चिट्ठि) लेनि चाहिये । इस चिट्ठिको ईश्वरकी सन्निधि और सन्निधिमे रहनेवाले पूजारीके हाथमे देना चाहिये, पूजारी ईश्वरके चरणकमलोमे उस सामानको रखेगा और पेस्कारको वापस देकर देवस्थानका हिसावमे लिखेगा । यात्रीलोक भि इनको देखकर ये देवकाम बरावर किया है या नहि । अपने सन्देहकी निवृत्ति करनी चाहिये ।

(५) रामेश्वरजीको जमीन आदि देनेवाले यात्रीलोगो कृपाकरके कोषाध्यक्षजीसे मिलना चाहिये । इस कामके अवश्य सहायता देंगे इस विषयमे पूर्ति करनेको लिये ट्रष्टीजीको अधिकार है ।

(६) गङ्गाजलको धातुके वर्तनमे लेना चाहिये । शिशेकेवोतलमे लोहेका या टीनके वर्तनमे गङ्गाजल लानेवाला यात्रिलोग देवस्थानके पात्रस्थानमे, या बाजारमे एक धातुका वर्तन मूल लेना चाहिये । वह पात्रस्थान तिस्रे प्रकारके द्वारके पास रखा हुआ है । पेस्कारके सामने गङ्गाजलको नये वर्तनमे डालना चाहिये । वह पेस्कार जलकी परीक्षा करेगा गङ्गाजल है या दुसरा पानी है । प्रयागसे और हरिद्वारसे लायाहुवा जल स्वीकार किया जायगा । रामेश्वरजीको गङ्गाजल चढानेकी इच्छा करनेवाला और रामेश्वरको आनेका असमर्थ है तो वह पार्सल (Parcel) द्वारा गङ्गाजल सहित पात्रको दूर प्रान्तसे भि भेजकर आपका नाम गोत्र नक्षत्र आदि लिखकर २-०-० दो रुपैया मानिआर्डर (M. O.) द्वारा भेजना चाहिये । रसीदलेना चाहतेतो और एक आना भेजना चाहिये । शिवरात्रि आदि पुण्य दिनो मे अभिषेक करानेवाला दो सप्ताहके पहिले भेजना चाहिये । जो लोग गङ्गाजल लाते है उनको पेशकारकी कचरिमे उनहे देख नहिहो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वह कचहरी जंहा नन्दी महाराज बैठ रहते है उस स्थानसे वांये हाथके कोनेमे संस्थित है। हर एक पात्रको २, दो रुपया देकर पेशकारसे रशीद लेनि चाहिये। रशीद लेकर पूजारीके पास जावे तो वह शङ्करजीको जल चढावेगा। गङ्गाजलका अभिषेक प्रतिदिन प्रातः कालमेसे अर्धजामाभिषेक समये चन्दनाभिषेक तक होता है। विशेषतः शिवरात्रिमे पूरा रातदिन सदैव अभिषेक होता है। गङ्गाजल चढाने वालेकी सुभितेके लिये मन्दिरमे भि गङ्गाजल बिक्ता है। एक रुपयाको मापका सोलवां भाग ($\frac{1}{16}$ measure) गङ्गाजल यहं मिलता है। इस्के शिवाय दो रुपैयाको टिकट लेना और एक नया पात्र मोल लेना चाहिये। मोल लिया हुआ गङ्गाजलके प्रमाणके माफिक वर्तन लेना चाहिये। उक्त रीतिसे रामेश्वरजीकी गङ्गाजल अभिषेक करानेवालेकी लालसा पूरी होति है। यदि यात्रीलोग भगवानके लिये यथाशक्ति कुछ रुपया देना चाहते है हर एक सन्निधिमे रखी हुइ हुंडि पेटीमे डाल देसक्ते है। हर एक महिनेके अन्तमे वह पेटी खोली जावेगी देवस्थानके हिसावमे रुपया जमा किया जावेगा। मंदिरमे महादेवजीके और मातेश्वरीजीके अभिषेक करानेवाला नीम्न लिखित रीति से अभिषेकका माफिक रुपैया देना चाहिये।

(७) चार रीतिसे अभिषेक होता है।	रु. आ. पै.
प्रसाद सहित उभयाभिषेक	५—४—०
प्रसाद सहित इतर उभयाभिषेक	१०—८—०
प्रसाद सहित पञ्चामृताभिषेक	२२—८—०
प्रसाद सहितं रुद्राभिषेक	५०—०—०

उस अभिषेक पुरा होनेका बाद अभिषेक करानेवालेको अभिषेक रीतिके अनुसार पञ्चामृत और प्रसाद भि मिलते है। (प्रसाद मीठा भात और खट्टा भात) वह भात (प्रसाद) पाकशालाके मेनेजरसे मिलता है। यह मेनेजर प्रसादकी परीक्षा करके यात्रिलोंको और कामवालोंको वांट देता है। मातेश्वरीजीकी सन्निधिकी बाहिर द्वारके पास पाकशाला है। पञ्चामृताभिषेक रुद्राभिषेकके लिये देवस्थानके स्टोरस (Store) क्रमशः चार छः रुपैयाकी गङ्गाजल दिया जाता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(८) टिकिटोंका मोल नीचे लिखे जाते है । रु. आ. पै.

हर एक गङ्गाजलकी वर्तनकी	२—0—0
दुग्धमे अभिषेक एक माप	१—२—0
सहस्र नाम अर्चना (भगवानजीके १००८ नाम और नैवेद्य (क्षीर)	३—0—0
त्रिशतो अर्चना ३०८ नाम और क्षीर नैवेद्य	१—८—0
अष्टोत्तर अर्चना भगवानका १०८ नाम	0—५—0
हर एक नारियेलकी	0—१—0
उपरोक्त रीतिसे उभयाभिषेक	५—४—0
उपरोक्त रीतिसे इतर उभयाभिषेक	१0—८—0
उपरोक्त रीतिसे पञ्चामृत अभिषेक	२२—८—0
उपरोक्त रीतिसे रुद्राभिषेक	५0—0—0

(९) भगवानजीकी जगन्माताजीको फुल और माला चढानाके लिये रुपया नदेना चाहिये । देवदर्शन करनेवाले बाजारसे कर्पूर पान सुपारि कुंकुम और नारियल लेना चाहिये । उपरोक्त रीतिसे पेशकार को रुपया देकर टिकट लेनेका बाद हि अभिषेक अर्चना आदि सब होते है ।

(१०) इस मंदिरमे शङ्करजी और मातेश्वरीजीके लिये सोना चांदिके बहुत् सोवारी और बहुमूल्य गहने भि है । इनको देखना चाहते हो तो सीवारीयोको देखनेको लिये पांचरुपया, गहनेको देखनेको लिये पंद्रह रुपया देकर टिकट लेना चाहिये । कोषाध्यक्षजीसे बोलकर उसको समय देकर पेशकारको रुपैया दे रसीद लेनि चाहिये । रामेश्वरजीकी सन्निधिको खोलनेको समय प्रातःकालमे स्फटीक लिङ्ग दर्शन अवश्यमेव करना चाहिये । प्रायः प्रातःकालमे चार बजेसे पांचबजे तक उस दर्शनके लिये ठिक समय है । उत्सवादीनोमे यह नियम नहि है । अर्धजाम दीपाराधना होनेके बाद शङ्करजीकी और अम्बाजीकी सोनके मूर्तिओंको अवश्य दर्शन करना चाहिये । उस समयमे उन मूर्तियोंको दीपाराधना होति है । पुराना द्वारके पास (Nayarvasal) दुसरा प्रकारमे वेमूर्ति विजाजमान है ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(११) इस मंदिरमे प्रकारके इर्द गिर्द २४ पुण्य तीर्थ है । उन तीर्थ मे स्नान करनेवाला जल भरनेके लिये एक डोरा लोटा अपने साथ लेना चाहिये । उस बर्तनमे पानी लेकर मंदिरमे स्नान करना चाहिये । अर्धमण्डपमे ब्राह्मण मात्र जाना चाहिये । हर एक मनुष्यको एक रुपयाकि टिकट लेकर ।

(१२) यात्रीलोग मंदिरमे पूजा दर्शन आदिके समाचार समझने लिये उपरोक्त समाचार लिख दिये गये है । देवस्थानके खजांजिसे या पेशकारसे और बात भि पूछनी चाहिये ।

रामेश्वरजीमे

गौंएका सेवाका अभाव ।

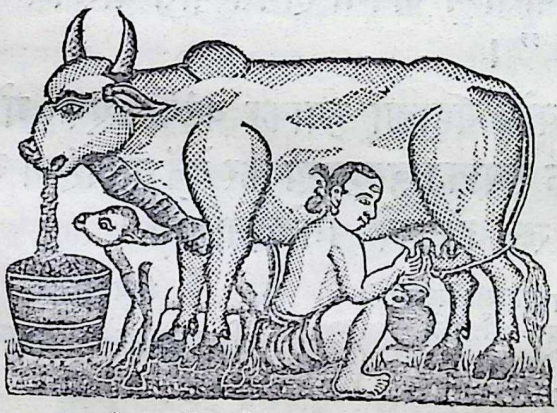

यस्यां जगन्ति निवसन्ति चतुर्दशापि
या देवताः स्वजनुषा हविषा धिनोति ।
पुत्रीबभूव यदनुग्रहतो दिलीपः
सा कामदाऽस्तु सुरभिः सुरभिस्सदा नः ॥

रामेश्वरजीमे गौंएका बडा दुरावस्था है । रास्तामे जो सब गौंए चरति फिरति है उन्की देखनेसे आंखोसे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(9)

अश्रु निकल आति । गौंएका केवल हड्डिया और चमडा देख पडता । जिस बखत् दुध देति है, उस समय उन्की मालिकोंने थोडा बहुत् खानेको देता है, लेकन दुध बन्ध होनेसे गौंएको रास्तामे छोड देता है। रास्तामे खानेका कुछ नहि मिलता । भुंख्के मारे समय समय दुकानदार लोगोंका बहुत् लुकसान करता है ।

अतएव रामेश्वर-यात्रीलोगोंका पास मेरा सानुनय निबेदन यह है कि, "तीर्थका अन्यान्य कार्य्यके साथ यथासाध्य अपना हाथसे घास मोलकर गौंएको खिलावें" ।

कोइ महात्मा कृपाकर यहंपर एक गोशाला बनायके सेवाका बन्दवस्थ कर देवें तो यहंका गौंएकी जीवन रक्षा हो सकें, निबेदनमिति ।

मथुरादास मावजी मेघजी
भाटीया-धर्मशाला
रामेश्वरम् ।
(१८-१२-२२)

निबेदक,
श्रीमनानन्द ब्रह्मचारी ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

॥ शङ्खमाहात्म्य ॥

पिता रत्नाकरो यस्य लक्ष्मीर्यस्य सहोदरी ।
विष्णोः करतले यस्तु देवानां प्रीति दायकः ॥

रत्नाकर-समुद्भव बिशुद्ध शङ्ख प्रणव मन्त्र शक्ति स्वरूप है । जिसको जगन्माता जगद्धात्री और श्री विष्णुभगवान् करतलमे धारण किया है, जिसमे नारायणजी और लक्ष्मीदेवी अति प्रसन्न रहतें है, जिसका ध्वनि शुनकर पिशाचादि उपदेवता पलायमान होता, और देवताओंने परम पुलकित होता है, पूराकालसे जिसका प्रचलन है; ऐसा कि कुरुक्षेत्र युद्धमे, नारायण हृषीकेश, अर्जुन, भीष्म, द्रोणादि महारथिओंने यो शङ्ख प्रेमसे व्यवहार किया, जिसका स्थान देवालय, भजनालय, गृहस्थालय, मठ, राजभवन, धनागारादिमे, जिसको केवलमात्र धारण करनेसे अङ्ग पवित्र होके, देवताओंमे बिश्वाष, दृढ भक्ति, धर्मभाव और मनशुद्ध हो सर्वबिध देह-व्याधि विद्युत् शक्तिका तरे निरामय करदेता, यो शङ्ख-बाद्य बिना देवपूजन यज्ञादि कोइ माङ्गलिक कर्म नहि होता, देवताओंको अभिषेक आरती प्रभृतिमे जिसका बिशेष प्रयोजन होता;—ऐसा शास्त्र सम्मत शिष्टाचारयुक्त पवित्रशङ्ख प्रति आलयमे रखना अत्यावश्यक है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सर्वत्र प्रचलन और सर्व साधारणका सुभिताके लिये, " शङ्खनिधि एण्ड कम्पेनी " ने पूजा पाठ और माङ्गलिक कर्ममे बजानेका, और अभिषेक आरतिका नानारूप पवित्र शङ्ख और स्त्री, पुरुष, शिशु, युवा, बृद्धादि सब लोगोंका व्यवहारके लिये शङ्खका नाना प्रकार नकसेदार जेवर चुडि, ताविज, अंगुरी, लडकेकी खेलाना, जपनेकी माला प्रभृति भारतीय प्रसिद्ध कारिगर द्वारा बनायकर किफायतसे बेचनेको लिये मयजुद् रक्खा है। जिन महाशयको उक्त कोइ चीज् आवश्यक होगा खुलासा नाम और पत्ता लिखकर भेजनेसे वि. पि. डाकमे भेज देता हुं ।

उक्त कम्पेनीमे नानाप्रकारके कौडी, असली जनार्दन ※ धूप, कुमारीकन्याकी चावल, श्रीरामेश्वरजी का सुगन्धि-भस्म, सेतुमाहात्म्य पुस्तक, रामेश्वरजी आदिका तसबीर, फोटो प्रभृति और अन्यान्य तीर्थ-स्थानका सर्वप्रकार सामान मिलता है ।

आनेवाला यात्रीलोगोंका सुभिताके लिये उक्त कम्पेनीमे ताजा चावल, दाल, आटा, मयदा, घि, मसालादि सब सामान हक्दरमे देनेको लिये मयजुद् रहता है ।

※ जनार्दन क्षेत्रका माहात्म्य देखिये ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

॥ जनार्दन क्षेत्रका माहात्म्य ॥

श्रीब्रह्माण्डपुराणान्तर्गत वल्कल क्षेत्रका माहात्म्य जैसा वर्णित है, उसका भावार्थसे संक्षेपमे इस प्रकार है कि, "कोइ समय ब्रह्माजी, प्रजापति ऋषि आदि सभासद्गणों सह आपन सभामे बैठे थे, इस अवसर मे परम बिष्णुभक्त नारदऋषि बीणा बजाकर हरिगुण गान करते हुये, ब्रह्माजीकी साभामे उपस्थित होनेसे ब्रह्माजीने आसनसे उठकर नारदजीकी अभ्यर्थना किया, यह देख नब-प्रजापतिओंने ब्रह्माजीको कहा कि "हे ब्रह्माजी! नारदजी आपका पुत्र है, पुत्रको देख आसनसे उठकर सम्भाषण करनेसे मर्य्यादाका हानि होता"। यह बचन शुनकर ब्रह्माजीने कोपान्वितहो कहा कि "हे नब-प्रजापते! मेइने पुत्रको देख आसनसे उठा इसमे मेरा मर्य्यादाका हानि नहि हुआ, परन्तु मेरेको यह बात आपलोगोंने कहनेसे मेरा मर्य्यादाका हानि हुआ, इसिलिये तुम लोगों को ममुष्य-लोकमे बास करने होगा"। ब्रह्माजी द्वारा शाप प्राप्त होकर नब-प्रजापतिओंने मर्त्तलोकमे जाते रहे, मार्गमे नारदजीका दर्शन पाय दृढ भक्तिसे स्तुतिकर प्रार्थना किया कि "हे ऋषिश्रेष्ठ! हमलोगों

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

का यह शाप किसबिध मोचन होगा सो आप कृपा-करके कहिये" । उनलोगोंका स्तुतिमे प्रसन्न होके नारदजीने कहा कि हे नब-प्रजापते! आपलोक दक्षिण समुद्रका किनारेमे एक क्षेत्र है; जहांपर नारा-यण-रुप एक अतिबृहत् अश्वत्थ बृक्ष विराजमान है; वहिंपर जाय तप किजिये; आप लोगोंका शाप मोचन होकर पुनः ब्रह्मलोकको प्राप्ति होगा । वह-स्थान आपलोगोंने पहचान सको या नहि, इसिलिये मेरा यह उत्तरीय-वल्कल की छोड देता हुं, यह वल्कल जहांपर गिरेगा वहि क्षेत्र है" । नारदजीकी उपदेशा-नुसार नब-प्रजातिओंने वह वल्कल क्षेत्रमे जाय तप करके शाप मुक्त हो ब्रह्मलोकको प्राप्त हुआ । इसिसे उस क्षेत्रको वल्कल क्षेत्र कहता है । (यह वल्कल नामसे मालावार देशका आदमीओंने वलकलम कहता और यह नामसे रेलवे कंपेनीने ष्टेशनका नाम वारकाला (Varkala) रखा है ।)

एकदा सूरपुरीमे समस्त देवताओंने एकत्रित होकर बिचार किया कि "बिष्णुजीने रामअबतार होके रावणको बध करनेसे वह ब्रह्महत्या पापका निबृत्तिके लिये ब्रह्माजीने वल्कल क्षेत्रमे महायज्ञ करके समस्त तीर्थके एकत्रितकर, वह तीर्थजलसे राम-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चन्द्रजीको अभिषेक करनेसे उनका रावण-वध जनित पापका निबृत्ति होगा" यह युक्ति अनुसार ब्रह्माजी ने महायज्ञका सर्बबिध द्रव्य प्रचुर परिमाण आयोजन कर वल्कल क्षेत्रमे जाय अति समारोहसे अन्यान्य ऋषिगणों सह महायज्ञ करने लगे और बहुत ब्राह्मणोंको नित्य प्रचुर भोजन और दक्षिणासे परितुष्ठ करते रहे। एकदिन ब्रह्माजीने अहंवश मनमे बिचार किया कि मेइने यह जो यज्ञ कर रहे है, और भोजन दक्षिणासे ब्राह्मणलोगोंको जैसा परितोष कर रहा हुं, ऐसा कोइ नहि कर सकेगा। अन्तर्यामी नारायण ने ब्रह्माजीका वह गर्व खर्व करनेका मानसकर जनार्दन नामसे वृद्धब्राह्मणका बेश धारणकर ब्रह्माजीके पास आय कहा कि "हे ब्रह्माजी! मेइ क्षुधासे अति कातर हुं, आपका बडा भारि नाम शुनकर मेइ आपका पास आया, मेरेको परितोषसे भोजन कराइये" ब्रह्माजीने साग्रहसे ब्राह्मणको आसनपर बैठाया, और सूपकारको बुलाय आच्छितरे जीमानेको कह दिया। ब्रह्माजीके आज्ञानुसार सूपकारने ब्राह्मणको उत्तम उत्तम खाद्यद्रव्य प्रचुर परिमाण दिया किन्तु ब्राह्मण निमेषमे समस्त निःशेषकर हाथ उठाके फिन अन्न मांगने लगे, भाण्डारका समस्त आहारीय सामग्री

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क्षणमात्रमे निःशेष होनेसे सूपकारने ब्रह्माजी
कि "हे ब्रह्माजी! वह ब्राह्मणने समस्त
निमेषमे निःशेषकर फिन हाथ उठायके अन्न
है, आप इसका उपाय बिधान किजिये"। यह बात
शुनकर बिस्मयाविष्ठहो ब्रह्माजीने ध्यान करके देखा
कि "नारायणजीने मेरा अहंकार चूर्ण [illegible] लिये
बृद्ध ब्राह्मणका रुप धारणकर आयें है
कर ब्रह्माजीने द्रुतगति जाय ब्राह्मणव
बहु स्तुति करके प्रार्थनाकी कि "हे
रुपधारी जनार्दन! मेरा अपराध
आपका कृपासे मेरा अहङ्कार ना
नारायणने ब्रह्माजीके स्तुतिसे प्रसन्न
"हे ब्रह्माजी ऐसा अहङ्कार न करना चाहिये, अब
आपने बाकी यज्ञकी समाधा किजिये"। ब्रह्माजीने
प्रार्थनाकी कि "हे जनार्द्दन! आपने यह बृद्ध ब्राह्मण
का बेश से यह स्थानपर अवस्थान किजिये और
आजसे यह स्थान जनार्दन क्षेत्र नामसे ख्यात
होनेका बर दिजिये"। नारायणने समस्त अङ्गीकार
कर लिया और वर दिया कि "जोकोइ मनुष्य यह
क्षेत्रमे आय मेरा भेजा हुआ सुदर्शन-चक्र द्वारा
निर्म्मित चक्रतीर्थमे स्नानकर मेरेको दर्शन करेगा सो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वाल्मीकिविद्यापीठपुस्तकालयः

प्रत्यावर्तनतिथिः

चक्रतीर्थमे स्नानकर मेरेको दर्शन करेगा सो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

DATE DUE

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

2089

AUTHOR आनन्द ब्रह्मचारी

TITLE रामेश्वर क्षेत्रको महात्म्य

923:226
BRA
1979 B.S.

2089

महेन्द्र संस्कृत विश्वविद्यालय
वाल्मीकि विद्यापीठ
पुस्तकालय

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu